स्पर्श की चाँदनी

काव्य (ग़ज़ल एवं नज़्म)संग्रह

शायर

रमेश 'कँवल'

स्पर्श की चाँदनी

काव्य (ग़ज़ल एवं नज़्म)संग्रह

शायर

रमेश 'कँवल'

Anybook

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं । प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश की फोटोकॉपी एवम रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवम पुनर्योग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरुत्पादित अथवा ज्ञान का संग्रहण प्रसारित नहीं किया जा सकता ।

पहला संस्करण : मई २०१९

ISBN : 978-93-86619-08-2

प्रकाशन :
Anybook
G - 248 2nd Floor
Sector 63
Noida - 201301 [U.P.]
Cell : 9971698930
E-mail contactanybook@gmail.com
Website www.anybook.org

स्पर्श की चाँदनीः रमेश 'कँवल'

Sparsh ki chandni : A poetry collection by Ramesh 'Kanwal'

मुद्रक : Repro Books
आवरण : Morpankh Arts

पुस्तक सज्जा : मोरपंख आर्ट्स
कॉपीराइट : रमेश 'कँवल'
वेबसाइट : www.rameshkanwal.com
इ-मेल : rameshkanwal78@gmail.com
मोबाइल : 878 976 1287 /709 159 6715

क़ीमत : ₹199 (एक सौ निन्यांबे रुपये)

समर्पण---

श्रीमती कमला देवी और स्मृतिशेष पूज्य पिताश्री हाकिम चंद प्रसाद के नाम
जिनके आशीर्वाद से मुझे लिखना पढ़ना आया

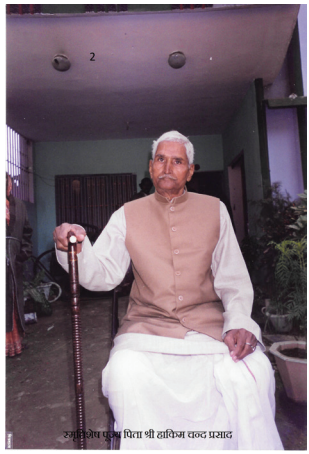

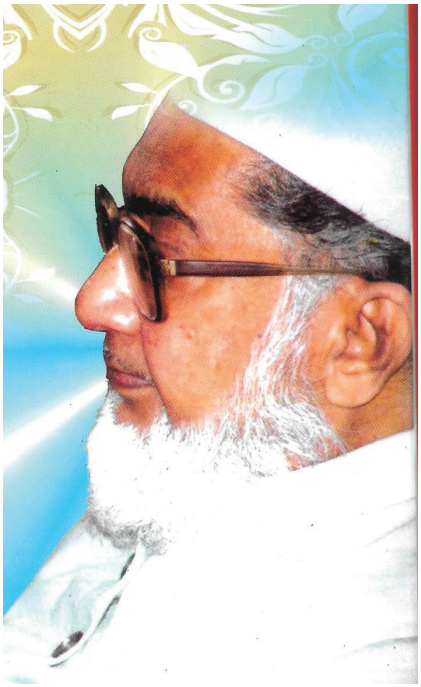

स्मृतिशेष परम आदरणीय उस्ताद प्रो.हफ़ीज़ बनारसी के लिए

बेहुनर को सिखाया हुनर
बेअसर को किया पुरअसर
इस क़दर है करम आपका
दाद देते हैं अहले-नज़र

जीवन संगिनी मंजू प्रसाद (22 जून 1978 से हमसफ़र)

तुम नसीबों से मिलीं
ज़िन्दगी जन्नत हुई

शोहरत की धूप का विमोचन

रमेश 'कँवल' पद्मश्री प्रो.कलीम आजिज़, प्रो.तल्हा रिज़वी बर्क़, प्रो.अलीमुल्लाह हाली के साथ (बाएं से)

आदित्य चौधरी – मेरा नाती

शोहरत की धूप का विमोचन (19 जनवरी 2014)
रमेश 'कँवल', डा. अनिल सुलभ, जनाब शफ़ी मशहदी,
प्रो.तल्हा रिज़वी बर्क़ और जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी,

रंग-ए-हुनर का विमोचन

स्पर्श की चाँदनी में रमेश 'कँवल' की शख़्सीयत और उनका कमाले-फ़न : सागर सियालकोटी

अपनी बात कमलेश भट्ट 'कमल' के इस शे'र से शुरू करता हूँ कि ---

फ़ेसबुक पर रोज़ होती हैं मुलाक़ातें
हम कहीं आया, कहीं जाया नहीं करते

नीरज गोस्वामी जी के हवाले से मेरा तआरुफ़ रमेश 'कँवल' जी से हुआ । बातचीत का सिलसिला आगे बढ़ा और हुक्म हुआ कि कँवल जी के शीघ्र प्रकाश्य काव्य संग्रह (ग़ज़ल और नज़्म इत्यादि) की भूमिका मुझे लिखनी है ।

रमेश कँवल जी से जब मेरी बात हुई तो मैं उनसे मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रह सका। बेहद सरल और सादा नेकदिल इंसान, कोई बनावट या सजावट नहीं । निहायत सादा ; ज़ुबान में सादगी का एक नायाब मुजस्समा। बिहार प्रशासनिक सेवा से संयुक्त सचिव स्तर से सेवानिवृत होने और राजधानी पटना में ए.डी.एम लॉ एंड आर्डर होने की कोई खनक नहीं ।

25 अगस्त, 1953 को क़स्बा जितौरा, तहसील पीरो, ज़िला आरा (भोजपुर), बिहार में श्रीमती कमला देवी (माँ)और स्मृतिशेष श्री हाकिम चंद प्रसाद (पिता) के घर अवतरित हुए रमेश जी आज भी ग्रामीण भाई-चारा के सुसंस्कारों को हृदय में संजोये हुए हैं । सुसंस्कारों का प्रफुल्लित पुष्प मकरंद ही उनके जीवन को गतिमान बनाये हुए है और तहज़ीब की ख़ुशबू ही उनकी रहनुमाई कर रही है । वे शोहरतों की शहज़ादी का हमसफ़र होने से ज़्यादा नेक

इरादों के फ़रिश्तों के हम क़दम चलना पसंद करते हैं । उनसे बात कर मैं अहमद फ़राज़ का ये शे'र बेसाख़्ता गुनगुनाने लगा :

ज़िन्दगी से यही गिला है मुझे
तू बहुत देर से मिला है मुझे

संवेदना हर शख़्स के अन्दर मौजूद होती है लेकिन वो कब शायरी के दिलकश झरने के रूप में फूट पड़े ये कहना मुश्किल है । रमेश 'कँवल' बचपन से ही शाइरी के जूनूने-शौक़ में मुब्तिला रहे ।

ये महज़ इत्तेफाक़ है कि लुधियाना का नाचीज़ शाइर सागर सियालकोटी उनके पांचवें (और हिंदी के तीसरे) ग़ज़ल संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" का दीबाचा (भूमिका) लिखने बैठा है जब कि रमेश कँवल' का महबूब शाइर साहिर लुधियानवी का जन्म भी इसी शहरे-ख़ुशगवार में लगभग 100 साल पहले हुआ जो हिंदी फ़िल्मों और उर्दू शाइरी के नुमायाँ दस्तख़त हैं । इतना ही नहीं रमेश 'कँवल' की पहली ग़ज़ल माल 19 साल की उम्र में लुधियाना से ही प्रकाशित होने वाले रिसाले "परवाज़' के अगस्त 1972 के शुमारे में 'कँवल' शाहाबादी के नाम से शाया हुई । ये मेरे और लुधियाना के लिए ख़ुशी और फ़ख़्र की बात है कि इसके बाद रमेश जी ने कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा और शे'री अदब को वक़्त बावक़्त किताबों से नवाज़ते रहे। उर्दू में लम्स का सूरज (1997) और रंगे – हुनर (2016) तथा हिंदी में सावन का कँवल (1997) और शोहरत की धूप (2013) के प्रकाशन के बाद अब 'स्पर्श की चाँदनी' अपनी छटा बिखेरने को तैयार है । जहाँ तक एजाज़-ओ-इज़्ज़त का तअल्लुक़ है उन्हें बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन ने सम्मानित किया है । वे फ़िराक़ गोरखपुरी राष्ट्रीय शिखर सम्मान, दुष्यन्त कुमार स्मृति पुरस्कार इत्यादि अनेक सम्मान हासिल कर चुके हैं।

उनके ताज़ा मजमूआ 'स्पर्श की चाँदनी' पढ़ कर मेरे ज़हन में रुख़साना नूर साहिबा का ये शे'र तैरने लगा :

खिड़कियाँ खोली नहीं दीवार घर की तोड़ दी
इतना ही वो कर सका ताज़ा हवा के नाम पर

रमेश 'कँवल' ने इस किताब में अनेकानेक विधाओं यथा ग़ज़लों, नज़्मों, सेहरा, माहिया, क़तआत फुटकर इत्यादि को शामिल किया है। लिहाज़ा मुझे ये शे'र कहना पड़ा ताकि हर तरफ़ से शाइरी की ताज़ा हवा आये। जहाँ तक 'कँवल' जी की शाइरी की बात है मैं समझता हूँ उन्होने शाइरी को Passion becomes passion not Profession के तौर पर लिया है। जब वे कहते हैं :

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आँखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

फ़ाइलातुन/फ़इलातुन/फ़इलातुन/फ़ैलुन
2 1 2 2 /1 1 2 2/1 1 2 2/2 2

कितने आसान लफ़्ज़ों में कितना बड़ा शे'र कह दिया ; ये ख़ुदादाद आमद का शे'र है जो कलम और दवात का हामिल नहीं है । और एक शे'र मार्फ़त का देखिये :

कोई दरवेश ये कह कर गया है
हमेशा एक-सा दिन कब रहा है

मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
1 2 2 2/1 2 2 2/1 2 2

बेहद मुतास्सिर करने वाले चंद और अशआर

मेरे दोस्त पल में ख़फ़ा हो गये
मैं हैराँ हूँ क्या से वो क्या हो गये

फ़ल्सफ़ा प्यार का कितना आसान है
जब मनाये कोई मान भी जाइए

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं
पर मनाने में वक़्त लगता है

दहेज़ की कुप्रथा को ख़त्म करने की नसीहत और बेटियों को बचाए रखने की गुज़ारिश का अंदाज़ तो देखिये :

रखिये बहू को बेटी की सूरत दुलारकर
लाई है अपने साथ क्या ज़ेवर न देखिये

बेटियों को बचा के रखिये 'कँवल'
उनको पाने में वक़्त लगता है

रमेश 'कँवल' की नज़्मों पर नज़रे-सानी करें तो उनमें बहुत सारे रंग मिलेंगे । पर्यावरण संरक्षण और ट्राफिक जाम आज की ज्वलंत समस्यायें हैं तो मतदाता जागरूकता गान हर साल मतदाता सूची में शामिल होने वाले युवा वर्ग को मतदान प्रक्रिया का क्रमिक विवरण बताते हुए उन्हें लोकतंत्र को जीवित रखने का सफल आह्वान है । कारगिल शहीदों के नाम नज़्म शहीदों को श्रद्धांजलि देते हुए नमन करने का सुन्दर चित्रण है।

'गुमशुदा लम्हे' और 'बीता हुआ कल' नज़्म नौजवान प्रेमियों के हृदय की वेदना की बेहतरीन अभिव्यक्ति है । रमेश 'कँवल' ने माहिए भी बख़ूबी कहे हैं :

साजन है सीमा पर
ज़ख़्मों का लश्कर
क्या करना बन ठन कर

बाँहों में चले आओ
यौवन आमंत्रण
सीने में समा जाओ

साहिर लुधियानवी इनके महबूब शाइर रहे हैं । जब 25 अक्टूबर 1980 को हृदय के शाइर साहिर की मौत हृदयाघात से हुई तो रमेश जी अत्यंत ही मर्माहत हुए । उदासियों ने इनकी आत्मा को घेर लिया । ख़िराजे-अक़ीदत के अल्फ़ाज़ पर ग़ौर फ़रमाइए :

होंटों पे तल्ख़ियों के समंदर उदास हैं
आँखों में सच्चे प्यार के मंज़र उदास हैं
शीशे के जिस्म ही नहीं साहिर की मौत से
जमुना किनारे ताज के पत्थर उदास हैं

रमेश 'कँवल' ने हुस्ने-रिवायत क़दीम शाइरी के साथ-साथ जदीद शाइरी का दामन भी थामे रखा है । आपने समाजी, सियासी और इन्सानी ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं पर कुछ न कुछ कहा है जिसमें अजमाल यानी ख़ूबसूरती झलकती है । आपकी शाइरी को मैं जब पढ़ रहा था मुझे ये बात बड़ी शिद्दत से महसूस हुई कि आज ज़िन्दगी के रास्ते कितने दुश्वार और नाख़ुशगवार हैं । आज के इस माहौल में नामंज़ूर मसाइल पर क़ाबू पाना आम आदमी के बस की बात नहीं । यही कुछ बातें हैं जो इंसानी जज़्बात को खुल कर कहने के लिए मजबूर करती हैं और शाइरी नाज़िल होती है । शाइर शाइरी की तरफ़ माइल हो जाता है ।

रमेश कँवल जी के ताज़ा काव्य (ग़ज़ल-नज़्म) संग्रह पर नज़रे-सानी करें तो उनकी ग़ज़लों और दीगर सिंफ़े-सफ़ात में तख़य्युल और तग़ज्जुल दोनों ही मौजूद हैं । रमेश कँवल की शाइरी में सादगी (simplicity), ख़ुलूस (sincerity) और जज़्बात (sensuousness) तीनों चीज़ें मौजूद हैं। कँवल जी एक बहुमुखी प्रतिभा के मालिक हैं और उनकी "स्पर्श की चाँदनी" में शाइरी की तमाम विधायें यथा ग़ज़ल, नज़्म, माहिये, गीत इत्यादि शामिल हैं। जहाँ तक उरूज़ और बहरो-वज़्न की बात है ; कमाल की पकड़ है उनकी। बहरो-वज़्न पर पूरा कण्ट्रोल है। उन्होंने ज़्यादातर बहर-ए-रमल, ख़फ़ीफ़ का इस्तेमाल किया है। दीगर बहरों का हवाला भी मिलता है। उन्होंने चुस्त क़ाफ़ियों का अच्छा इस्तेमाल किया है।

जहाँ तक आलोचनात्मक नज़रिए की बात है लोगों ने तो ग़ालिब तक को नहीं बख्शा है । उनमें भी ग़लतियाँ निकाल दीं । मेरा अपना नज़रिया है कि शेरो-शायरी में जुस्तजू –ए- हुस्नो-जमाल और ख़ूबसूरत इस्तआरों की तलाश होनी चाहिए । कँवल के यहाँ भी कमियां हो सकती हैं लेकिन मैंने उनकी शायरी का भरपूर लुत्फ़ उठाया है और आपको भी उनकी शाइरी के फ़न के गुलिस्तान में मुहब्बत की ख़ुशबू तलाशने की दावत देता हूँ । मुतमईन रहिये आप मसर्रत की परियों से रूबरू होंगे ।

वरक़-वरक़ पे मुनव्वर हैं लब की तहरीरें
किताबे-जिस्म का हर बाब मुझसे रौशन है

मैं रमेश 'कँवल' की काविशों को सलाम करता हूँ । उम्मीद करता हूँ कि वे आइन्दा भी ख़ूबसूरत, लाजवाब और दिलकश पैग़ामे-कलाम से हमें रुआश्ना कराते रहेंगे । किताब का उन्वान जितना ख़ूबसूरत है उतनी ही दिलकश तसावीर भी मजमुए में शामिल हैं ।

मैं ख़ुशलिबास मनाज़िर सजा के लाता रहा
हर इक ग़ज़ल का अलग लहज़ा था अलग फ़न था

मज़्मून का इख़्तसार अपने एक शे'र से करने की इजाज़त चाहता हूँ :

परिंदे ही मेरी परवाज़ का मरकज़ रहे 'सागर'
मैं उड़ने का हुनर बस सीख लेता हूँ उड़ानों से

बसंत पंचमी
10 फ़रवरी 2019

नेक तमन्नाओं के साथ
सागर सियालकोटी
1077 फेज़ 1 अर्बन स्टेट
डूगरी रोड ,
लुधियाना -141013
मोबाइल 987 686 5957

रमेश कँवल की ग़ज़लों की थपकियाँ सुला देने वाली नहीं होतीं- अनिरुद्ध सिन्हा

ग़ज़ल का प्रत्येक शेर एक सार्थक संकेत करने की क्षमता रख़ता है। चाहे वो सांस्कृतिक, राजनीतिक या सामाजिक हो। हर पहलू को उसके जातीय आधार पर समझने में ये सफ़ल है। कारण है, इसकी रचना-प्रक्रिया से लेकर सम्प्रेषण-प्रक्रिया तक शायर की लंबी भूमिका रहती है, संभवतः सौंदर्यात्मक और वैचारिक अनुभूति की कसौटी पर कसे जाने तक। ग़ज़ल की कथ्य-संस्कृति एक व्यापक और गहरी अवधारणा है। अपने समय की मुश्किलों और तल्ख़ सच्चाइयों की सूचनाएँ देकर जीवन और समाज के अंतर्विरोधों के विविध रूपों को अभिव्यक्त करती है।

रमेश कँवल का चेहरा ग़ज़ल की दुनिया में कोई नया नहीं है। इनकी ग़ज़लें पारंपरिक विषयों से लेकर आज की वर्जनाओं पर भी कटाक्ष करती हैं। पूरा ग़ज़ल-संसार भावावेग और अनुभूति की सच्चाई पर खड़ा है। ऐसा संसार जिसमें अतीत के गुदगुदाने वाले रहस्य, वर्तमान की परेशान करने वाली सच्चाइयाँ, और भविष्य के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाइयाँ हैं। इनका आनेवाला नया (ग़ज़ल एवं नज़्म) संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो इन कथनों को बल देते हैं। संग्रह में यूँ तो ग़ज़ल और नज़्म के अतिरिक्त सेहरा, माहिए, क़तआत और कुछ फुटकर शेर भी हैं जो अपने-अपने सधे शिल्प और अर्थ-व्यंजना में सामान्य से हटकर हैं।

कर सके कुछ भी कहाँ अन्ना या केजरीवाल भी
जब करप्सन मुल्क में नज़्र-ए सियासत हो गई

मैं न जा पाया किसी मंदिर या मस्ज़िद में कँवल
माँ के चरणों में मेरी पूजा इबादत हो गई

आज हम जिस सियासी व्यवस्था की ज़मीन और वातावरण में जी रहे और साँसें ले रहे हैं वो सच्चाई, ईमानदारी और भरोसे के अनुकूल नहीं हैं। प्रथम शेर में प्रतीक के तौर पर अन्ना और केजरीवाल आए हैं जिनके सहारे देश से भ्रष्टाचार दूर करने की कल्पना की गई थी लेकिन तस्वीर जो थी वही बनी रही। कारण जो भी हो, परिवेश के अनुसार यहाँ पर संतुलित भाषा, प्रतीक और सुगठित छंदों के आधार पर अपनी सामाजिक भावना को मूर्त रूप देने की सफल कोशिश की गई है। शायर का रूझान आदर्शों और व्यैक्तिक स्वपनों का साथ छोडकर एक साधारण अनुभूति और यथार्थ की ओर है। आज के यथार्थ के प्रति आदर भाव नहीं बल्कि तिरस्कार ध्वनित होता है। आज के सियासी सामाजिकों ने सामाजिकता के धोखे में रखकर जनता को किस प्रकार ठगने का उपक्रम किया है, वो सहजता और सरलता के साथ व्यक्त हुआ है। साहित्य जनसामान्य की पीड़ा, उसके सुख-दुख की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है और ये अभिव्यक्ति ही साहित्यकार का कर्म है। रमेश कँवल की ग़ज़लों और नज़्मों में इस दायित्व का भरपूर निर्वाह हुआ है। ये अपने पूरे काव्य -संसार के साथ जन सामान्य के सुख-दुख को जोड़कर एक नवीन कल्पना और अपनापन का भाव व्यक्त करते हैं। ऐसे ही कवि/शायर जन के सच्चे प्रतिनिधि कहे जा सकते हैं।

रमेश कँवल की इस पुस्तक की ग़ज़लों और नज़्मों में जहाँ भी सामाजिक हित की बात आई है इनकी वैविध्यपूर्ण जीवन-दृष्टि व्यक्त हुई है जिसमें साम्यवादी दार्शनिक सिद्धांत की व्याख्या और उसकी अभिव्यक्ति प्रमुख है---

दिन से डर कैसा हसीं रात से जी डरता है
ज़िन्दगी तेरे तिलिस्मात से जी डरता है

कब बिछड़ जाएंगे, कब देंगे दग़ा क्या मालूम
गुनगुनाते हुए लम्हात से जी डरता है

अपनी ग़ज़लों की दुनिया में शायर रमेश कँवल के पाँव यथार्थ की भूमि पर टिके होते हैं उनका हृदय ख़ुद से और मनुष्य से प्यार करता है। एक सजग शायर की तरह समकालीन विसंगतियों को पूरी तरह से जाँच परख कर ही अपनी आशंका को वाणी देते हैं। यथार्थवाद के नाम पर सिर्फ़ मनुष्य की बुराइयों और दुर्बलताओं का ही उद्घाटन नहीं करते बल्कि उनके परिणामों की ओर भी इशारा करते हैं। इनकी ग़ज़लों में उज्जवल पक्ष और अंधकारमय पक्ष दोनों हैं आदर्श और यथार्थ ---मतलब आदर्श और यथार्थ साथ-साथ चलते हैं। आदर्शवाद ऊबे हुए जीवन के लिए एक सुखद वैविध्य उत्पन्न करता है तो वहीं यथार्थवाद जीवन के पलायन से रोकते हुए परिस्थितियों के विरुद्ध आक्रोश और विरोध की भूमि तैयार करता है। इन दोनों विशेषताओं के कारण इनकी ग़ज़लों में एक विशेष तरह की चमक देखने को मिलती है। रमेश कँवल यथार्थ के साथ अमित संभावनाओं को भी उसके साथ शामिल कर लेते हैं जहाँ पर यथार्थवाद और आदर्शवाद एक साथ मिल जाते हैं। ग़ज़लों का कथ्य वर्तमान की वास्तविकता में सीमाबद्ध रहता...मसलन पाप-पुण्य, धूप-छांह और सुख-दुख मिला रहता है।

इस संग्रह की अधिकांश ग़ज़लों में शब्द और अर्थ का समन्वय, अर्थों की परस्पर संगति, शब्द चयन और माधुर्य हैं। ध्वनि और गति के सामंजस्य रहने के कारण लय सौंदर्य स्वतः ही मुखर हो उठता है।

रमेश कँवल ने अपनी ग़ज़लों में सौंदर्य और प्रेम को पारिवारिक, गाह्स्थिक, जीवन की मर्यादाओं के बीच प्रतिष्ठित करने का सफल प्रयास किया है। प्रेम के माध्यम से "कला स्वरूप शास्त्र"का स्वतंत्र अस्तित्व उभरकर

प्रायः सामने आ जाता है .....

मेरे सामर्थ्य और साहस के पीछे
तेरे सौंदर्य की कुछ तितलियाँ हैं

इस सुनहरी धूप की गुस्ताख़ियाँ तो देखिये
सीम तन ज़ोहरा-जबीं क्यों कश्ती-ए-साहिल में है

इन दोनों शेरों को पारिवारिक और सांसारिक प्रेम की बुनावट और मज़बूती के रूप में भी ले सकते हैं। आध्यात्मिक और ईश्वर-प्रेम के व्यंजक रूप में। लौकिक और अलौकिक दोनों स्तरों पर परिभाषित करने की गुंजाइश बनती है।

कुल मिलाकर कह सकते हैं रमेश कँवल का पूरा ग़ज़ल-संसार आत्मीय और विश्वसनीय स्तर पर आत्मगत शैली में रचा हुआ है।

अनिरुद्ध सिन्हा
गुलज़ार पोखर,
मुंगेर
बिहार - 811201
Contact : 7488542351
Email : anirudhsinhamunger@gmail.com

रमेश कँवल

स्पर्श की चाँदनी का इसरार : रमेश कँवल

ग़ज़ल महबूब के परदे में कहीं ख़ुद को और कहीं ख़ुदा को तलाश करने की वो साधना है जो लफ़्ज़ों से तस्वीर बनाती है तो महबूब का चेहरा बन जाता है और अर्थ में डूबती है तो आध्यात्म का मंज़र बिखेर देती है । ग़ज़ल कहने वाले शायरों ने फ़िक्र के बाग़ में ग़म का बिस्तर बिछाया, इश्क़ की चादर ओढ़ी और ख़्वाबों का वो तकिया लगाया जिसने उन्हें न तो ख़ुद से दूर किया न ख़ुदा से । उन्हें अपनी शख़्सीयत की उस सच्चाई का एहसास हो गया जहाँ ख़ुदी और ख़ुदा का फ़र्क़ भी साफ़ हो जाता है । सादिक़ का एक शेर मशहूर हुआ :

लगाना चाहे जो अंदाज़ा अपनी क़ीमत का
तो अपने पद से तू इक बार हट के देख ज़रा

इस शेर का मफ़हूम आहिस्ता आहिस्ता प्रशासनिक सेवा के एक वरीय पद से सेवा निवृत होने के बाद मुझे मालूम होने लगा :

मेरे दोस्त पल में ख़फ़ा हो गए
मैं हैराँ हूँ क्या से वो क्या हो गए

जो शोहरत की तख़्ती हवा ले उड़ी
पता, नाम, सब लापता हो गए

सरकारी सेवा में रहते हुए मेरे पहले 2 मजमुए (ग़ज़ल संग्रह) लम्स का सूरज (उर्दू लिपि में) और सावन का कँवल (देवनागरी लिपि में) डा. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी,भागलपुर की देख-रेख में प्रकाशित हुए । रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ मेरा तीसरा मजमुआ शोहरत की धूप (हिंदी) का प्रकाशन मेरे आदरणीय मित्र अनवारे इस्लाम,भोपाल के अथक परिश्रम

से मेरे सेवा काल में ही संपन्न हुआ । किताब निहायत ही ख़ूबसूरत सज-धज और आकर्षक गेटप में थी । अदबी दोस्तों और फ़नशनास लोगों की भरपूर सराहना से मन काफ़ी प्रफ्फुलित, आनंदित और आह्लादित हुआ ।

उर्दू के दूसरे मजमुआ 'रंगे – हुनर' की इशाअत के सिलसिले में जब मैं अपने अज़ीज़ दोस्त आलम ख़ुर्शीद से मिला और पूछा कि क्या पटना में इसकी ख़ूबसूरत और स्तरीय छपाई हो सकती है तो उन्होंने अपने मित्र फ़र्द –उल- हसन का नाम लिया जिनसे मैं पूर्व परिचित था । जनाब फ़र्द –उल-हसन इरम पब्लिकेशन के मालिक ठहरे ।

'रंगे-हुनर' निहायत ही ख़ूबसूरत और प्रथम दृष्टि में ही मन को लुभाने वाला मजमुआ साबित हुआ । मल्टी कलर में आर्ट पेपर पर ब्यूटीफुल डिज़ाइंड । अनेक दोस्तों ने दावा किया कि उर्दू में शायरी की ऐसी किताब अब तक बिहार से प्रकाशित नहीं हुई है ।

राष्ट्रीय उर्दू भाषा विकास परिषद् (National Council for Promotion of Urdu Language), भारत सरकार ने इसे बल्क पर्चेज़िंग की लिस्ट में शामिल किया । सेवा निवृति के बाद मसरुफ़ियत का सफ़र आहिस्ता हुआ, थमा नहीं । मसरुफ़ियत थम जाए तो भी अच्छा नहीं लगता ।

दिल भी फ़ुर्सत में हम भी फ़ुर्सत में
आज आगे की बात सोचेंगे

मेरे उस्तादे-मोहतरम हफ़ीज़ बनारसी साहब मरहूम के इंतक़ाल को 10 साल हो गए । मैंने उनके नाम पर बज़्म-ए हफ़ीज़ बनारसी पटना की बुनियाद डाली । 8 अप्रैल 2018 को बिहार उर्दू अकादमी के सभागार में पहला इजलास सजा । उन पर कुछ मज़्मून पढ़े गए । अनेक शायरों ने उनकी ग़ज़लों के मिसरा तरह में तीन ज़मीन पर बेहतरीन तरही ग़ज़लें पढ़ीं । 29 जुलाई 2018 को बिहार प्रशासनिक सेवा संघ, पटना के सभागार में "एक शाम : हफ़ीज़ बनारसी के नाम" का आयोजन हुआ । मखमली आवाज़ के संवाहक डा. शंकर प्रसाद ने उनकी ग़ज़लों को अपनी दिलकश आवाज़ दी ।

इसमें पटना के अनेक गुलूकारों ने उनकी ग़ज़लों को अपनी आवाज़ अता की । 22 दिसम्बर 2018 को हिंदी साहित्य सम्मलेन पटना के सभागार में बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी का तीसरा इजलास लगा जिसमें पर्यावरण के संरक्षण और प्रदूषण के नियंत्रण से सम्बंधित आलेख और कविताएँ पढ़ी गयीं ।

फ़क़ीरों की सोहबत मुझे भा गयी
कि खोया ज़रा-सा तो पाया बहुत

मसरुफ़ियत कम न हो इसलिए अपनी पुरानी नयी ग़ज़लों का एक संकलन निकालने की ख़्वाहिश रूबरू हो बैठी । सहेजा, सँवारा, निकाला और इकठ्ठा किया । प्रो.डा.तल्हा रिज़वी बर्क़, श्री अनिरुद्ध सिन्हा, श्री सागर सियाल कोटी, श्री दरवेश भारती ने हौसला बढ़ाया । अरुण कुमार आर्य ने लैपटॉप पर टंकित अंकित पाण्डुलिपि का गहन अवलोकन किया । बह्र और उनके अरकान दर्ज किये । मैं उनकी बेलौस काविशों का बेहद ममनून हूँ । उनकी कोशिशों की बदौलत ही टंकण की अशुद्धियों को कम किया जा सका है । श्री दरवेश भारती जी ने तो हिंदी ग़ज़ल की बारीकियों की चाशनी में मेरी ग़ज़लों का स्पर्श कर इसे नवीन आवरण ही दे दिया। मैं उनका बेहद शुक्रगुज़ार हूँ ।

उर्दू का पहला मजमुआ लम्स का सूरज और हिदी में ग़ज़लों नज़्मों इत्यादि का संग्रह "स्पर्श की चाँदनी" में एक बात कामन है : लम्स या स्पर्श चाँदनी कभी कभी बेहद अज़ीज़ लगती है ; कभी अच्छी नहीं लगती, और कभी कभी तो बिलकुल नहीं भाती लेकिन प्रशासनिक सेवा का पदाधिकारी रहने के कारण विधि-व्यवस्था, कोर्ट कचहरी, अदालत, रसूखदारों, ज़मीरवालों से निकट संपर्क का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । उन अनुभवों और तजुर्बों को मैंने अपनी शायरी का हिस्सा बनाया है । मुलाहिजा हो :

न क़ानून का डर, न थी कुछ हया
गुनाहगारों ने क़हर ढ़ाया बहुत

अदालत रसूखों पे चलती रही
उसे मुजरिमों ने छकाया बहुत

गवाहों को पैसे मिले इस क़दर
फ़रिश्तों के क़ातिल रिहा हो गये

हैं गवाही पे जब मुनहसिर
मुन्सिफ़ो! फ़ैसले रह गए

दबदबा मुजरिमों का क़ब्ल से था
अब तो अंदाज़ क़ातिलाना हुआ

हौसले मुजरिमों के बढ़ते हैं
जल्द जब फ़ैसला नहीं होता

बेच डालूं ज़मीर मैं भी 'कँवल'
बस इसी बात पर अड़ा है कोई

पर्यावरण आज की विकट समस्या है । वायु,जल एवं ध्वनि प्रदूषण से कौन त्रस्त नहीं और कौन इनसे निजात नहीं चाहता । पहले एक ग़ज़ल फिर चंद अशआर

ज़हर घुलने लगा हवाओं में
शोरगुल, चीख़ है फ़िज़ाओं में

पेड़ पौधों से उड़ गये पंछी
कट गये वृक्ष शहरों गावों में

धूप का क़हृ है परिंदों पर
आदमी ठहरे किसकी छावों में

शाहराहों पे गाड़ियों का धुंआ
हॉर्न बे वजह सब दिशाओं में

धूप, पानी, हवा मुहाल हुए
सभ्यता की नयी कथाओं में

आई सी यू में गिरवी हैं साँसें
नक़ली फल, दूध और दवाओं में

लक्ष्य अवसाद के हैं व्यापारी
नौकरी है 'कँवल' बलाओं में

छेड़ना ठीक नहीं नदियों, पहाड़ों को 'कँवल'
ज़ल्ज़ले क़हरे-ख़ुदा बन के बताने निकले

न झील कोई शहर में, नहीं तलैय्या ताल भी
ये लश्करे-परिन्द फिर बताइये कहाँ रहे

न देखो शोर मज़हब की नज़र से
ये सेहत पर बहुत भारी पड़ा है

चलना ट्राफिक जाम में
अब 'कँवल' आदत हुई

ज़हर दरिया में घुल गया इतना
मछलियाँ तैरती हैं साहिल पर

ये पर्यावरण, ये प्रदूषित नगर
ये बच्चे, ये स्कूल, और सड़क बेशजर

ठिकाना, न दाना, न पानी जहां
परिंदों के किस काम के वो नगर

आज दफ़्तरों में काम इतना बढ़ गया है कि उसे पूरा करने के लिए दफ़्तर को घर लाना पड़ता है जिससे घर का माहौल बिगड़ जाता है । फिर घर के झगड़े-झमेले को दफ़्तर ट्रांसफर करना : डिप्रेशन, तनाव, अवसाद इन्हीं माहौल में अपना दायरा बढ़ाता है :

घरों की बदगुमानी साथ आयी
परेशाँ सारा दफ़्तर देखते हैं

पहन कर आये हैं ग़ुस्से का जामा
ख़ुदाया घर में हंगामा मचा है

बुढ़ापा हमसफ़र जबसे हुआ है
परेशाँ घर को अक्सर देखते हैं

अना और ज़िद की कश्मकश किसी भी शख़्स और उसकी शख़्सीयत को बिखेर देती है । ये वाज़ेह है कि ज़िद हर इक बात पर नहीं अच्छी । फिर भी हम इस से परहेज़ नहीं कर पाते । अना की दीवार खड़ी कर खुशियों की शहज़ादी को पास नहीं आने देते । मैंने इन्हें अपने अशआर में शामिल किया है । उम्मीद है आप पसंद करेंगे :

वो आये हैं लपेटे ज़िद की चादर
मेरे बिस्तर पे भी मेरी अना है

ज़िद का बिस्तर समेटिए दिलबर
घर बसाने में वक़्त लगता है

ज़िद का बिस्तर समेट लेता है
मेरा दिलबर ख़फा नहीं होता

ज़िद के कपड़ों में दफ़्न तो न करो
मैं क़रीब आया, तुम भी आओ न

आज कल बेटियों की तादाद कम हो रही है । इसके लिए सामाजिक और सरकारी स्तर पर अनेक तजवीज़ें की जा रही हैं । लिंगानुपात क़ायम रहे इस मुहीम में मैं भी दिल से साथ हूँ :

बेटियों को जनम दीजिये फ़ख्र से
घर में बेटी बना कर बहू लाइए

रखिये बहू को बेटी की सूरत दुलार कर
लाई है अपने साथ क्या ज़ेवर न देखिये

बेटियों को बचा के रखिए 'कँवल'
उनको पाने में वक़्त लगता है

चहचहा उट्ठा है ये घर सारा
मेरी बेटी के साथ हैं कमरे

जब मुझे भी आम लोगों की तरह रोज़गार के सिलसिले में बच्चों की जुदाई का दंश झेलना पड़ा तो मैंने अर्ज़ किया :

अब शजर पर नहीं परिन्द कोई
साथ बीवी के घर में रहता हूँ

लेकिन मैं अभी तक प्रेम और रुमान की दुनिया से हिजरत का जश्न

नहीं मना सका हूँ । अभी भी जिस्म की ख़ुशबू और मुहब्बत की रौशनी मुझे सुकून देती हैं । मेरे ये अशआर इसकी ताईद करेंगे :

इक नशा-सा ज़ेहन पर छाने लगा
आपका चेहरा मुझे भाने लगा

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं
पर मनाने में वक़्त लगता है

दिसंबर का हूँ सूरज
मई की चाँदनी हूँ

तेरे दीदार की ठंडक मुझे गर्मी में मिले
सर्दियों में तेरे गालों की तपन हासिल हो

बदन में तमाज़त तेरे जिस्म की
मेरे होंठों पर तेरे लब चाहिए

फ़ल्सफ़ा प्यार का कितना आसान है
जब मनाये कोई मान भी जाइए

मेरे होंटों की नैया मचलने लगे
तेरे गालों की ऐसी नदी चाहिए

आप भी आग लगाने का हुनर रखते हैं
बन सँवर शौक़ से बारिश में नहाने निकले

बहुत सर्द बिस्तर था, कमरा था ठण्डा
तुम्हारे बदन की तमाज़त से पहले

ज़ायक़ा उनके हुस्न का लीजे
देखिये उनको माहे-कामिल में

कुछ धनवान मित्रों के साथ साथ कुछ ग़रीब दोस्त भी मेरे मित्र मंडली में शामिल हैं । दोनों के तजरिबे के साथ साथ धन के सम्बन्ध में अपना ख़याल भी पेशे-ख़िदमत है :

ग़रीब लोग ज़रूरत पे अपनी रोते हैं
अमीर लोगों को धन बेसबब रुलाता है

ख़ुशी, नींद, सेहत न भूख उसके वश में
ये औक़ात है दोस्तो! आज धन की

है ज़रूरी, ज़रूरतें कम हों
ख़्वाहिशों को 'कँवल' विराट न कर

मैं स्पर्श की चाँदनी का आनंद लेने हेतु ये मजमुआ आपके दस्ते-मुबारक के हवाले करता हूँ । उम्मीद है ये मजमुआ आपको मुहब्बत और रुमान के दिलकश मौसम से भी रूबरू कराएगा और फ़िक्र और फ़न की गगनचुम्बी इमारतों की बुलंदियों और ख़ूबसूरती से भी वाकिफ़ कराने का हौसला दिखायेगा । गुज़ारिश है कि आप अपनी गिरां क़द्र राय से नवाज़ेंगे।

आ गया स्पर्श का मौसम 'कँवल'
अनसुने क़िस्से बदन कहने लगे

रमेश कँवल

पटना,
8 मार्च, 2019

अनुक्रमणिका

ग़ज़लें

1. तेरा जलवा हर एक महफ़िल में 37
2. ज़हर घुलने लगा हवाओं में 38
3. शरीके-ज़िन्दगी हूँ 39
4. कोई दरवेश ये कह कर गया है 40
5. आसमां से छिन गया जब चाँद तारों का लिबास 42
6. ग़म बिछड़ने का नयन सहने लगे 43
7. ख़त्म बेटों का फ़ोन आना हुआ 44
8. मुजरिमों से मिले रह गए 46
9. दिल में जब नफ़रत हुई 47
10. अपनों के दरमियान सलामत नहीं रहे 48
11. ज़रा ज़रा सी बात पर वो मुझसे बदगुमां रहे 49
12. अब तो मैं रोज़ घर में रहता हूँ 50
13. जो पल गुज़र गए उन्हें मुड़कर न देखिये 51
14. जुर्म का इक़रार कर लूँ मुझको हिम्मत हो गयी 52
15. ख़ुदा के दर पे मैं अपनी इबादतें रख दूँ 53
16. ग़रीब लोगों की जां का मुआवज़ा क्या है 54
17. जब उदासी ने मेरे घर का ठिकाना ढूंढ़ा 55
18. हवा की चिराग़ों से है दोस्ती 56
19. फूल की पंखड़ियों को मसलेंगे 57
20. अंधेरों का मैं पैरहन ओढ़ लूँ 58
21. राज़ जो दिल में है,चेहरे पे छुपाते क्यों हो 59
22. मुद्दतों बाद तेरी याद सुहानी आयी 60
23. ये सच है कि सर धड़ से मेरा दूर हुआ था 62
24. ज़ोहरारुख़ महजबीन लगती है 63
25. ज़रुरियात की फ़ेहरिस्त वो दिखाता है 64

26. अगरचे मुझको समर्पित किसी का यौवन था 65
27. मेरी पलकों पे तेरे ग़म ख़ज़ाने निकले 66
28. दिल बहुत बेक़रार रहता है 67
29. रोज़ सोते हैं जाग जाते हैं 68
30. बेहुनर को सिखाया हुनर 69
31. घरों में और बाहर देखते हैं 70
32. न कोई लाल-ओ-गौहर देखते हैं 72
33. मेरे दोस्त पल में ख़फ़ा हो गये 74
34. रंगरलियाँ वो मनाने को तहख़ाने में मिले 75
35. मुझे ज़िन्दगी ने लुभाया बहुत 76
36. नशे में चूर होना चाहती है 78
37. कौन कहता है ये झमेला है 79
38. रिश्ते रिसते रह जाते हैं 80
39. ज़ुल्फ़ गालों पे बिखरने को ग़ज़ल कहते हैं 81
40. है मुहब्बत जो तेरे दिल में वही इस दिल में है 82
41. कहीं वहशतनुमाँ अंगड़ाइयाँ हैं 83
42. क़ह्क़हों के दिए जलाओ ना 84
43. मेरे मंसूब होने के क़िस्से 85
44. तुम हमारे न हुए, कोई हमारा न हुआ 86
45. आ गया इन्तख़ाब का मौसम 87
46. डट के पीछे मेरे पड़ा है कोई 88
47. दिल की बस्ती में लूट पाट न कर 89
48. मुझसे मिलता है अजनबी की तरह 90
49. दिन से डर कैसा हसीं रात से जी डरता है 91
50. उसको चिंता रहती है बस अपने मान और शान की 92
51. किसी की आँखों में बेहद हसीन मंज़र था 93
52. लफ्ज़ मैं और तुम मआनी हो 94

53. सुनी है सभी की मगर की है मन की 95
54. तेरे बिस्तर पे कोई सोता है 96
55. मुझको मुझसे जुदा नहीं करता 97
56. 'आदमी बुलबुला है पानी का' 98
57. हम ख़ाकनशीनों को अब आराम नहीं है 99
58. अपने अंदाज़ से गँवाता हूँ 100
59. अब जाड़े का हुआ है अंत 102
60. मौत है नग़मासरा अब ज़िन्दगी ख़ामोश है 103
61. ध्वंस का वंध्याकरण अब कीजिये 104
62. चिराग़ों को है आज आँधी का डर 105
63. दूर करिये अधूरापन मेरा 106
64. दिल का मौसम,तेरी गलियाँ,दिन सुहाने सोचकर 107
65. दिल की रानी हो जा तू 108
66. मुफ़्त मिली पहचान कहाँ हूं 109
67. बेटियों की बहुत ज़रूरत है 112
68. कहीं ऐसा न हो ये ज़िन्दगी साग़र में ढल जाए 113
69. दुज़दीदा निगाही से नहीं कोई शिकायत 114
70. अभी तक हैं दरे-एहसास पर लम्हे गिरां कितने 115
71. बात दिलबर की दिलकशी की है 116
72. इक नशा-सा ज़ेह्न पर छाने लगा 117
73. ग़म छुपाने में वक़्त लगता है 118
74. जो अब तक न पाया वो सब चाहिए 119
75. जोबन के दरीचों पे कोई पर्दा नहीं था 120
76. आइये मेहरबाँ और पास आइये 121
77. फूल को ख़ुशबू, सितारों को किरन हासिल हो 122
78. गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना 123
79. ये न कहिये भला नहीं होता 124
80. तेरे वस्ल की शोख़ चाहत से पहले 126

स्पर्श की चाँदनी में शामिल ग़ज़लों के बह्रें और उनके अरकान 127

नज़्में

81. हल्के फीके रंग न भायें ,डालो मुझ पर गहरा रंग 131
82. ट्रैफ़िक जाम 132
83. होली (एक मसनवी) 133
84. पर्यावरण संरक्षण 134
85. कलवार ध्वज गान 136
86. मतदाता जागरूकता गान 137
87. कलवार गौरव गान 140
88. कारगिल के शहीदों के नाम 142
89. ऐतराफ़ 145
90. बीता हुआ कल 146
91. वक़्त 148
92. शिकायत 149
93. मजबूरी 150
94. गुमशुदा लम्हे 151
95. अहसास-ए-अहद-ए-गुज़श्ता 152

सेहरा

96. जनाब रहमत अली रहमत का सेहरा 154
97. जनाब शहीर आलम का सेहरा 156

माहिए 159
क़त'आत 163
पर्यावरण से सम्बंधित मुक्तक 167
फुटकर शेर (मुत्फ़र्रिक़ात) 169
शाइर का परिचय 170
तस्वीरें 173
महबूब शायर साहिर लुधियानवी को ख़िराजे-अक़ीदत 188

ग़ज़लें

* * *

तेरा जल्वा हर एक महफ़िल में
ग़म का दूल्हा है आज मुश्किल में

धीरे-धीरे सभी हुए रुख़्सत
अब तेरी याद तक नहीं दिल में

राहतों के चिराग़ हैं रौशन
देर कुछ भी नहीं है मंज़िल में

ज़ायक़ा उनके हुस्न का लीजे
देखिये उनको माहे–क़ामिल में

हुस्ने-मक़्तल में है अजब सज-धज
जो है क़ातिल वही है बिस्मिल में

अब सियासत ने मिटा डाला है
फ़र्क़ आलिम में और जाहिल में

चीन में हर नगर का चाँद जुदा
हम 'कँवल' आज भी हैं महमिल में

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 8 मार्च, 2019

* * *

ज़हर घुलने लगा हवाओं में
शोरगुल, चीख़ है फ़िज़ाओं में

पेड़ पौधों से उड़ गये पंछी
कट गये वृक्ष शहरों गावों में

धूप का क़ह्र है परिंदों पर
आदमी ठहरे किसकी छावों में

शाहराहों पे गाड़ियों का धुंआँ
हॉर्न बेवजह सब दिशाओं में

धूप, पानी, हवा मुहाल हुए
सभ्यता की नयी कथाओं में

आई सी यू में गिरवी हैं साँसें
नक़ली फल, दूध और दवाओं में

लक्ष्य अवसाद के हैं व्यापारी
नौकरी है 'कँवल' बलाओं में

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 8 मार्च, 2019

* * *

शरीके–ज़िन्दगी हूँ
मैं मस्ती की नदी हूँ

गुलों की ताज़गी हूँ
मैं शबनम की नमी हूँ

जुनूं हूँ, आशिक़ी हूँ
बशर हूँ, बंदगी हूँ

दिसंबर का हूँ सूरज
मई की चाँदनी हूँ

निहारो रात दिन तुम
मैं इक सूरत भली हूँ

हया सिंगार मेरा
कली की सादगी हूँ

गवाही मुजरिमों की
अदालत में खड़ी हूँ

मुहब्बत का हूँ क़ायल
'कँवल' इक आदमी हूँ

बह्र : बह्रे-हज़ज मुरब्बा महज़ूफ़
अरकान : मफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन : 31 अक्टूबर, 2006

* * *

कोई दरवेश ये कह कर गया है
हमेशा एक-सा दिन कब रहा है

गुलों पर हुस्ने-शबनम की क़बा है
इसी सूरत पे सूरज भी फ़िदा है

ज़माना देख कर हैराँ हुआ है
तेरा ग़म मेरी पलकों पर सजा है

सहा है हमने जो तुमने सहा है
मगर अंदाज़ अपना कुछ जुदा है

वो आये हैं लपेटे ज़िद की चादर
मेरे बिस्तर पे भी मेरी अना है

न उनके रूठने का वक़्त कोई
मनाने में हमें अरसा लगा है

न देखो शोर मज़हब की नज़र से
ये सेहत पर बहुत भारी पड़ा है

उदासी डाल कर बैठी है ख़ेमा
तबस्सुम एक क़िस्सा बन गया है

पहन कर आये हैं ग़ुस्से का जामा
ख़ुदाया घर में हंगामा मचा है

मेरा महबूब है बाँहों में मेरी
"बहारों ने यक़ीनन कुछ कहा है"

'कँवल' पर 'रौशनी' की मेह्रबानी
भिवंडी में भी ग़ज़लें पढ़ रहा है

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान :मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन :मुंबई, 8 अक्टूबर, 2017

***

आस्मां से छिन गया जब चाँद तारों का लिबास
शबनमी कपड़ों में लिपटी थी ज़मीं की नर्म घास

धुंद के पर्वत पिघलते देखकर ख़ुश थीं बहुत
दोपहर को ताज़ा कलियाँ भी हुईं पर महवे-यास

तोड़कर दीवार लम्हों की हुआ जब रू-ब-रू
मैं भी अफ़सुर्दा था, उसका दिल भी था बेहद उदास

मौजज़न इमरोज़ का खारा समुंदर था बहुत
तेरी यादों के जज़ीरे थे मगर कुछ आस-पास

जब बदन कलियों के सूरज की किरण छूने लगी
ओस की बूंदों ने पाया ख़ुद को बेहद बदहवास

मेरे तन में ख़ेमाज़न थी इक सुलगती दोपहर
वो भी था पहने हुये बर्फ़ीले मौसम का लिबास

जिस्म की चादर लपेटे था 'कँवल' वो गुलबदन
मैं भी उससे रेज़ा-रेज़ा हो रहा था रू-शनास

बह्र : बह्रे- रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 15 जून,1981

* * *

ग़म बिछड़ने का नयन सहने लगे
ख़ुशनुमा मंज़र ख़फ़ा रहने लगे

जिस्म की मजबूरियाँ रौशन हुईं
दूरियों की धूप तन सहने लगे

हौसलों के शहर बेमंज़र हुए
आस्थाओं के महल ढहने लगे

मुझको भाती है गयी रुत की महक
उसको अच्छे ख़्वाब के गहने लगे

आ गया स्पर्श का मौसम 'कँवल'
अनसुने क़िस्से बदन कहने लगे

बह्र : बह्रे- रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान :फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : जुलाई, 1984

* * *

ख़त्म बेटों का फ़ोन आना हुआ
बेटियों से मिले ज़माना हुआ

याद के फूल सूखते ही नहीं
उनसे बिछुड़े हुए ज़माना हुआ

मतलबी सब हैं अपने मतलब के
मुफ़्त कब किसका मुस्कुराना हुआ

ज़िन्दगी में मेरी न कुछ बदला
बेसबब उनका आना जाना हुआ

गुनगुनाने लगा उन्हें पाकर
दिल का मौसम भी आशिक़ाना हुआ

दबदबा मुजरिमों का क़ब्ल से था
अब तो अंदाज़ क़ातिलाना हुआ

उसने छलकाए जाम आँखों से
मैं गिरफ़्तार जा के थाना हुआ

तितलियाँ साइकिल पे उड़ती हैं
बेटियों का सफ़र सुहाना हुआ

पायलों की छनक है घर आँगन
बन के बेटी बहू का आना हुआ

मरहबा मरहबा रमेश 'कँवल'
बेटियों को सफल पढ़ाना हुआ

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 11 नवम्बर, 2017

***

मुजरिमों से मिले रह गए
होंठ मेरे सिले रह गए

कह सके बात दिल की न लब
मिल के भी बेमिले रह गए

सच को सूली चढ़ाया गया
झूठ के क़ाफ़िले रह गए

मिट गईं जिस्म की दूरियाँ
रूह के फ़ासिले रह गए

आप अब भी हसीं, मैं जवां
ख़्वाहिशों को गिले रह गए

जीतना हारना जीतना
क्या ग़ज़ब सिलसिले रह गए

मरहबा फ़ेसबुक ऐ 'कँवल'
दोस्ती के सिले रह गए

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसद्दस सालिम
अरकान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
सृजन : 3 मई, 2016

* * *

दिल में जब नफ़रत हुई
ख़ैरियत रुख़्सत हुई

बंद दरवाज़े हुए
बरहना वहशत हुई

एक लम्हे की ख़ता
सदियों की शामत हुई

ज़ेह्न की दीवार पर
मुख़्लिसी की छत हुई

इत्र के बाज़ार में
फूलों की शोहरत हुई

जमअख़ोरी जब बढ़ी
दाल की क़िल्लत हुई

सारे मज़हब अड़ गए
शांति अब रुख़्सत हुई

तुम नसीबों से मिले
ज़िन्दगी जन्नत हुई

चलना ट्राफ़िक जाम में
अब 'कँवल' आदत हुई

बह्र : बह्रे- रमल मुरब्बा महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 8 नवम्बर, 2015

***

अपनों के दरमियान सलामत नहीं रहे
दीवारो-दर, मकान सलामत नहीं रहे

नफ़रत की गर्द जमअ निगाहों में रह गई
उल्फ़त के क़द्रदान सलामत नहीं रहे

यूँ इख़्तिलाफ़ बढ़ गया क़ौमों के दरमियाँ
मिल्लत के सायबान सलामत नहीं रहे

रौशन हैं आरज़ू के बहुत ज़ख़्म आज भी
ज़ख़्मों के कुछ निशान सलामत नहीं रहे

लौटा रहे हैं लोग पुरस्कार इन दिनों
यानी ये मेहरबान सलामत नहीं रहे

ऐसा नहीं कि सिर्फ़ यक़ीं दर-ब-दर हुआ
दिल के कई गुमान सलामत नहीं रहे

महफ़ूज़ बामो-दर हैं सदाक़त के आज भी
धोखे के पायदान सलामत नहीं रहे

अपनों से अपने लहजे में बातों का है कमाल
कुछ शख़्स बदज़ुबान सलामत नहीं रहे

वो लोग बेअदब थे 'कँवल' बेख़ुलूस थे
हम जैसे बेज़बान सलामत नहीं रहे

बह्र : बह्रे-मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
सृजन : 8 नवम्बर, 2015

***

ज़रा-ज़रा-सी बात पर वो मुझसे बदगुमाँ रहे
जो रात-दिन थे मेहरबाँ, वो अब न मेहरबाँ रहे

जुदाइयों की लज्ज़तों की वुसअतें नहीं रहीं
वो ख़ुशख़यालेे-वस्ल बन के मेरे दरमियाँ रहे

पहेलियाँ बुझाओ मत, बहाने अब बनाओ मत
यहीं कहीं नहीं थे तुम, बताओ फिर कहाँ रहे

वो मेरे साथ कब न थे गिला करूँ जो मैं भला
ज़रा-ज़रा-सी बात का फ़ुज़ूल क्यों बयाँ रहे

न झील कोई शहर में, तलैय्या ताल भी नहीं
ये लश्करे–परिन्द फिर बताइये कहाँ रहे

मुहब्बतें, मुरव्वतें, लिहाज़ या ख़ुलूस हो
सभी हैं दर-ब-दर कि अब न इनके क़द्रदाँ रहे

मसर्रतों की धूम उनके फ्लैट में है रात-दिन
हमारे ग़म की बस्तियों में कर्बे-जाविदाँ रहे

ज़रा-ज़रा-सी बात पर बिछड़ गए जो बेसबब
अना-ओ-ज़िद की कश्मकश में हम यहाँ वहाँ रहे

ये आसमाँ की तीरगी नुमाइशों की रौशनी
'कँवल' तुम्हारी राह में हमेशा कहकशाँ रहे

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन मक़बूज़
अरकान : मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन
सृजन : 8 नवम्बर, 2014

* * *

अब तो मैं रोज़ घर में रहता हूँ
एक मुश्किल सफ़र में रहता हूँ

हाँ ! मुहब्बत ज़बान है मेरी
इसलिये मैं ख़बर में रहता हूँ

मेरी निस्बत है ग़ैरों के ग़म से
मैं ख़ुशी के असर में रहता हूँ

दूर रह कर भी पास है रहती
अपनी माँ की नज़र में रहता हूँ

मेरा मतलब ही है मेरा मज़हब
अपने मतलब के घर में रहता हूँ

दूर रहता हूँ मैं सियासत से
इसलिए मो'तबर में रहता हूँ

अब शजर पर नहीं परिन्द कोई
साथ बीवी के घर में रहता हूँ

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मफ़ाइलुन फ़ैलुन
सृजन : 1 मई , 2014

***

जो पल गुज़र गए उन्हें मुड़कर न देखिये
सब कुछ है आज, माज़ी के मंज़र न देखिये

बाहर के वाक़्यात को अन्दर न देखिये
और क़ल्बी वारदात को बाहर न देखिये

रखिये बहू को बेटी की सूरत दुलारकर
लाई है अपने साथ क्या ज़ेवर न देखिये

अक्सर चटख भी जाता है आईना-ए-जमाल
हर लम्हा अपने हुस्न का तेवर न देखिये

गलियों के शाहराहों के मंज़र तबाह हैं
अपने ही घर सुकून है, बाहर न देखिये

पहचान अपनी रखिये हिफ़ाज़त से इन दिनों
रहज़न हैं चार सिम्त पलट कर न देखिये

दरिया था शीरीं ख़्वाबों का आँखों में मौजज़न
कैसा उमड़ पड़ा है समुन्दर न देखिये

शोहरत है ओस जैसी न इतराइये बहुत
बिछने लगी है धूप की चादर न देखिये

एहसास के गुलाब भी कुम्हला गए 'कँवल'
बर्क़ो-वफ़ा, हफ़ीज़ से शायर न देखिये

बह्र : बह्रे-मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
सृजन : 6 अप्रैल, 2018

* * *

जुर्म का इक़रार कर लूँ मुझको हिम्मत हो गयी
सच कहूँगा आपसे मुझको मुहब्बत हो गयी

स्पर्श तक करने लगे हैं आरिज़ो-लब, ज़ुल्फ़ का
अब सफ़ीरे-शहरे-दिल की इतनी जुर्रत हो गयी

हम तुम्हारे हो गए, तुम भी हमारे हो गए
एक पल में इक सदी क्या ख़ूबसूरत हो गयी

मैं ग़ज़ल के फूल उसको पेश कर मदमस्त था
वो हुआ मख़्मूर, उसकी भी इनायत हो गयी

लग गईं पाबंदियां बाहर निकलने पर बहुत
जब किसी दोशीज़ा को मुझसे मुहब्बत हो गयी

'केजरीवाल' 'अन्ना' भी तब कुछ कहाँ कर पाए थे
जब करप्सन मुल्क में नज़रे-सियासत हो गयी

मैं न जा पाया किसी मंदिर या मस्ज़िद में 'कँवल'
माँ के चरणों में मेरी पूजा-इबादत हो गयी

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन / फ़ाइलान
सृजन : 17 अप्रैल, 2013

* * *

ख़ुदा के दर पे मैं अपनी इबादतें रख दूँ
तुम्हारे माथे पे ख़ुशियों की आयतें रख दूँ

बदन-नवाज़ बदन की शराफ़तें रख दूँ
मैं शब की बाहों में दिन की इमारतें रख दूँ

शरीफ़ लोगों की बचकाना हरकतें रख दूँ
ग़रीब लोगों की बस्ती में आफ़तें रख दूँ

तुम्हारी झील-सी आँखों की गर इजाज़त हो
तुम्हारे होंटों पे अपनी मुहब्बतें रख दूँ

तुम्हारे जूड़े में ताज़ा गुलाब सजता रहे
तुम्हारी साँसों में ख़ुशबू की वुसअतें रख दूँ

बग़ैर झूठ के घर बार चल नहीं सकता
क़रीब आओ मैं सच की नज़ाकतें रख दूँ

बदन पे तैरते सावन की वो इबारत है
ये दिल की ज़िद है मैं उस पर वसीअतें रख दूँ

तेरे बग़ैर तो लगता था जी न पाऊंगा
तेरे बग़ैर भी ज़िन्दा हूँ, अज़मतें रख दूँ

मैं चल भी सकता हूँ 'अन्ना' के साथ साथ 'कँवल'
अगर कहीं पे ये घर की ज़रूरतें रख दूँ

बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाइलुन फ़एलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 10 अप्रैल, 2013

* * *

ग़रीब लोगों की जां का मुआवज़ा क्या है
वो मर भी जायें तो बच्चों को फ़ायदा क्या है

कोई भी फ़ैसला उसके बिना नहीं होता
ऐ नाख़ुदा तुझे मालूम क्या ख़ुदा क्या है

घड़ी को मैंने मिला रक्खा है घड़ी से तेरी
मैं जानता हूँ तू हर वक़्त चाहता क्या है

तेरे बिछड़ने का दिल को मलाल क्या होता
जो सुख का साथी हो दुख में निबाहता क्या है

तुम्हारे नाम पे जब दिल मेरा नहीं धड़के
तुम्हीं बताओ मुहब्बत में तब रखा क्या है

खटकता रहता है इतवार ज़हन में मेरे
मैं जानता नहीं छुट्टी का फ़ल्सफ़ा क्या है

लिबास क़ीमती पहने हुए दिसंबर का
'कँवल' को जून की मलमल से झाँकता क्या है

बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाइलुन फ़एलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 9 अप्रैल, 2013

***

जब उदासी ने मेरे घर का ठिकाना ढूँढा
मेरी ख़ुशियों ने भी जाने का बहाना खोजा

हाँ ! जुदा होने के हालात थे जल्दी के मगर
वस्ल की यादों ने कुछ देर ठहरना चाहा

धूप, गर्मी की रिदा तान के जब सोने लगी
घर के आँगन ने भी शबनम को बिखरता देखा

घर के बँटवारे में माँ आई मेरे हिस्से में
पंच कहने लगे जीवन का ख़ज़ाना ले जा

बेटियों ने किया गुलज़ार हर इक आँगन को
घर में वो आईं, मसर्रत का तराना गूँजा

ख़ुशबयानी थी तेरी दूर हक़ीक़त से 'कँवल'
सच समझते रहे सब जिसको फ़साना निकला

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 12 अप्रैल, 2013

* * *

हवा की चिराग़ों से है दोस्ती
बहुत मुख़्तसर है मेरी ज़िन्दगी

उमीदों के पर को कतरने से क्या
उड़ानें तो हैं हौसलों पर टिकी

मकानों पे मौसम की तहरीर है
फ़िज़ाओं में हैं तलख़्याँ तलख़ियाँ शोर की

कड़क बिजलियों की है काली घटा
न जाओ, ठहर जाओ, कुछ पल अभी

भला खोने को है मेरे पास क्या
मुझे ज़िन्दगी जब न कुछ दे सकी

अभी तुम नशे में हो कुछ मत कहो
मैं फ़ुर्सत में तुमसे मिलूँगा कभी

बहुत नर्म लहजे में उसने कहा
'कँवल' अब सुनाओ ग़ज़ल प्यार की

बह्र : बह्रे-मुत़क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 11 अप्रैल, 2013

* * *

फूल की पंखड़ियों को मसलेंगे
अजनबी बन के फिर वो चल देंगे

लफ्ज़ बैसाखियों पे थिरकेंगे
फ़िक्र रुसवाइयों से संभ्लेंगे

तुम हमें भूल पाओगे शायद
हम भी तुमको भुलाना चाहेंगे

कोई पलटेगा जब वरक़ दिल के
सूखे टूटे गुलाब महकेंगे

तुम भी फ़ुर्सत में हम भी फ़ुर्सत में
आज आगे की बात सोचेंगे

धूप मेहमान बन के आयेगी
शबनमी घर बक़ा को तरसेंगे

तुम अगर हाँ, नहीं में पूछोगे
हम 'कँवल' फिर जवाब कल देंगे

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 13 अप्रैल, 2013

***

अँधेरों का मैं पैरहन ओढ़ लूँ
उजालों से दामन बचा के रहूँ

बहुत हैं खिवैया मेरी नाव के
ये कश्ती न डूबे मेरी क्या करूँ

ज़रूरी नहीं रौशनी के महल
मेरे पास आओ मैं लब चूम लूँ

तेरा नाम तेरा पता है जुदा
मेरी ज़िद तुझे शाम तक ढूँढ़ लूँ

नया शहर, पहचान भी है नयी
कहाँ उसकी आहट जो दस्तक मैं दूँ

मुझे ज़िन्दगी का सबब मिल गया
'कँवल' बेटियों की हिफ़ाज़त करूँ

बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 14 अप्रैल, 2013

* * *

राज़ जो दिल में है, चेहरे पे छुपाते क्यों हो
मुझसे जब हाथ मिलाते हो, दबाते क्यों हो

अपने सीने पे सजा लेते हो क्यों याद मेरी
तुम मुझे बाँहों का तावीज़ बनाते क्यों हो

दिल दुखाते हो मेरा, तोड़ते रहते हो मुझे
रूठ जाता हूँ तो फिर मुझको मनाते क्यों हो

मुस्कुराते हो मुसलसल मुझे ग़म दे के अगर
मुझको तोहफ़े की तरह दिल में सजाते क्यों हो

जब नहीं होता है महफ़िल में 'कँवल' जाने-ग़ज़ल
तुम सर-ए-बज़्म मेरे शे'र सुनाते क्यों हो

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 12 अप्रैल, 2013

***

मुद्दतों बाद तेरी याद सुहानी आयी
मुद्दतों हिज्र के दरिया में रवानी आयी

मुद्दतों मुझको सुनाता रहा क़िस्सा कोई
मुद्दतों याद मुझे अपनी कहानी आयी

मुद्दतों दूर रही कमरे की ठंडक मुझसे
मुद्दतों कमरे में वो शोख़ न मानी, आयी

मुद्दतों बीवी ने घर-बार सँभाले रखा
मुद्दतों मुझको न इक पाई बचाने आयी

मुद्दतों माँ ने मेरे बालों में ऊँगली फेरी
मुद्दतों बाद मुझे दर्द बयानी आयी

मुद्दतों बेटियाँ घर की रहीं रौनक़ बनकर
मुद्दतों याद बहुत उनकी निशानी आयी

मुद्दतों ज़ख़्मों के लश्कर मुझे धमकाते रहे
मुद्दतों बाद मुझे ख़ाक उड़ानी आयी

मुद्दतों वस्ल के मंज़र मुझे याद आते रहे
मुद्दतों बाद गई रुत की निशानी आयी

मुद्दतों बेटी से आबाद रहा घर मेरा
मुद्दतों बाद बहू घर में सयानी आयी

मुद्दतों मुझको लुभाता रहा लहजा तेरा
मुद्दतों बाद तेरी चिट्ठी पुरानी आयी

मुद्दतों बाद मिला ट्रेन में तुझ-सा कोई
मुद्दतों याद बहुत तेरी जवानी आयी

मुद्दतों खाक में मिलता रहा मेयार कँवल
'मुद्दतों बाद मुझे बात बनानी आयी'

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 02 जून, 2013

***

ये सच है कि सर धड़ से मेरा दूर हुआ था
पर मैं भी तो सच बोल के मंसूर हुआ था

जो तुमने दिया ख़्वाबो-ख़यालात का तोहफ़ा
ग़ज़लों में मेरी ढल के वो मशहूर हुआ था

सब ख़्वाब मेरे खो गए यकलख़्त उसी पल
जब मेरे तसव्वुर से भी तू दूर हुआ था

सन्नाटा था पसरा हुआ तन्हाई थी हाइल
आप आये तो ये घर मेरा मख़्मूर हुआ था

मुझ पर थे फ़क़ीरों के इनायातो-करम वो
सुल्तान भी दर पर मेरे मजबूर हुआ था

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन
सृजन : 15 अप्रैल, 2013

* * *

ज़ोहरा-रुख़ महजबीन लगती है
अब भी तू दिलनशीन लगती है

दिन-ब-दिन बेहतरीन लगती है
ज़िन्दगी क्या हसीन लगती है

उसकी आँखों की मय मुबारक हो
रक्स में सरज़मीन लगती है

जो सफ़र करते हैं बुलंदी पर
उनको दिलकश ज़मीन लगती है

आस्तीनों में साँप पलते हैं
साफ़ पर आस्तीन लगती है

आसमानों पे जा के देख लिया
ये ज़मीं बेहतरीन लगती है

साल चालीस हो चुके हैं 'कँवल'
अब भी 'मंजू' हसीन लगती है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 10 जून, 2013

***

ज़रूरियात की फ़ेहरिस्त वो दिखाता है
फिर इक इशारे पे बाँहों में झूल जाता है

हमेशा वादों की छाँवों में मुस्कुराता है
कभी-कभार भी वादा नहीं निभाता है

सुना के लोरियाँ रातों में माँ सुलाती है
सवेरे 'पढ़ने को जाओ', पिता जगाता है

मैं उसके होंठों की पाकीज़गी का क़ायल हूँ
कलामे-पाक सुनाये, भजन जो गाता है

सफ़र पे निकलूं तो कहती है माँ 'ख़ुदा हाफ़िज़'
सलामती का ये नुस्ख़ा ही काम आता है

लगाई आग तो पहले छुपा के मुँह लेकिन
अब आगे आगे वही आग भी बुझाता है

ग़रीब लोग ज़रूरत पे अपनी रोते हैं
अमीर लोगों को धन बेसबब रुलाता है

जो ऐश करते है रातों में उन शरीफ़ों को
सवेरे फूल-सा चेहरा कहाँ लुभाता है

कभी तो आ के 'कँवल' बैठ रूबरू मेरे
ये फ़ेसबुक पे अबस वक़्त क्यों गँवाता है

बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 16 जून, 2013 (फ़ादर्स डे)

****

अगरचे मुझको समर्पित किसी का यौवन था
मैं बेवफ़ा था, कहीं और मेरा तन-मन था

न छत थी और न दीवारो-दर, न आँगन था
अभाव के घने जंगल में मेरा बचपन था

उभरते-टूटते रिश्तों का खोखलापन था
शजर-शजर पे इन्ही लज़्ज़तों का गुलशन था

झिझकती-झेंपती गजगामिनी नदी थी उधर
इधर उमंड़ते समुन्दर का बावलापन था

वो ख़्वाबगाह की ग़ज़लें सुना रही थी मुझे
अदा-ए-ख़ास से उसका खनकता कंगन था

वरक़-वरक़ पे मुनव्वर थीं लब की तहरीरें
किताबे-जिस्म का हर बाब मुझसे रौशन था

नदी ने रेत बनाया था काट कर जिनको
उन्हीं चटानों का फिर डेल्टा पे बंधन था

मैं ख़ुशलिबास मनाज़िर सजा के लाता रहा
मेरी ग़ज़ल का अलग लहजा था, अलग फ़न था

न पूछ बेबसी उसके कुंवारेपन की 'कँवल'
हवस के नाग लपेटे बदन का चंदन था

बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 8 अगस्त,1984

***

मेरी पलकों पे तेरे ग़म के ख़ज़ाने निकले
और होंठों पे तबस्सुम के तराने निकले

फिर मेरा क़िस्सा मुझे आप सुनाने निकले
दिल दुखाने को बहुत ख़ूब बहाने निकले

तुमसे बिछड़ूँ तो मैं जिंदा रहूँ, कब सोचा था
तुम चले आये तो मौसम भी सुहाने निकले

फ़तह कर के भी तो शर्मिंदा रहे तुम ख़ुद से
क्यों नहीं शहर में फिर जश्न मनाने निकले

रहनुमाई का दिखाते कोई दिलकश मंज़र
तुम तो बस बात, फ़क़त बात बनाने निकले

आप भी आग लगाने का हुनर रखते हैं
बन सँवर शौक़ से बारिश में नहाने निकले

मुल्क नाज़ाँ है जवानों के इसी जज़्बे पर
जान पे खेल के आफ़त से बचाने निकले

छेड़ना ठीक नहीं नदियों, पहाड़ों को 'कँवल'
ज़ल्ज़ले क़हरे-ख़ुदा बन के बताने निकले

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 27 जून, 2013

* * *

दिल बहुत बेक़रार रहता है
आपका इंतज़ार रहता है

तुम मुझे भीड़ से बुला लोगे
तुम पे ये ऐतबार रहता है

तुम जो सोलह सिंगार करते हो
मेरी आँखों में प्यार रहता है

बे-इजाज़त तुम्हारे दर पर हूँ
दिल पे कब इख़्तियार रहता है

एक लम्हे पे इख़्तियार नहीं
इक सदी का क़रार रहता है

घर में रहते थे चैन से पहले
घर में अब इन्तशार रहता है

एक कश्ती को ग़र्क़ करने में
कितनी मौजों का वार रहता है

जुर्म उसका नहीं है अब कुछ भी
आदतन वो फ़रार रहता है

अब तो सावन है शामे-रिमझिम है
क्यों 'कँवल' अश्कबार रहता है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 7 जुलाई, 2013

***

रोज़ सोते हैं, जाग जाते हैं
मौत से ज़िन्दगी चुराते हैं

एक एहसास जाग उठता है
आप तनहाइयों में आते हैं

तुम जुदा हो गए जो रस्ते से
मंज़िलों के पते न भाते हैं

हमसफ़र साथ जब नहीं होता
देख कर राह मुस्कुराते हैं

मैं कड़ी धूप में सँवरता हूँ
आप जब इत्र में नहाते हैं

बीज हो जाता है फ़ना पहले
फल दरख़्तों पे तब ही आते हैं

जज़्ब करते हैं ज़ख़्मे-दिल पहले
फिर ग़ज़ल आपको सुनाते हैं

शोर है चार सू 'कँवल' साहब
शे'रो-फ़न के नवाब आते हैं

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 23 नवम्बर, 2013

* * *

उस्तादे – मोहतरम जन्नतनशीन हफ़ीज़ बनारसी मरहूम की नज़्र

बेहुनर को सिखाया हुनर
बेअसर को किया पुरअसर

इस क़दर है करम आपका
दाद देते हैं अहले-नज़र

बारिशों के मज़े के असर
गल रहे गीली मिटटी के घर

धूप निकली नहीं पूरे दिन
चाँदनी पर थी उसकी नज़र

उन उड़ानों का अब ज़िक्र क्या
हौसला था, मैं जब था निडर

ऐसे लिक्खा मुझे आपने
ख़ुश हुआ पढ़ के सारा नगर

एक अफ़्वाह उडती रही
मीडिया में रही इक ख़बर

माँ की बाँहों में खोई रही
बेटी ससुराल से आयी घर

मैं 'कँवल' उसपे मरता रहा
मुझपे थी वो फ़िदा उम्र भर

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसद्दस सालिम
अरकान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
सृजन : 14 फ़रवरी, 2014 (वैलेंटाइन डे)

***

घरों में और बाहर देखते हैं
मसाइल के समंदर देखते हैं

गुलाबों से मुअत्तर देखते हैं
हसीं रुख़ पर दिसंबर देखते हैं

मचल जाते हैं जिन बातों पे बच्चे
मचल कर हम भी उन पर देखते हैं

अज़ाँ होने लगी है मस्ज़िदों में
नमाज़ी दिल मुनव्वर देखते हैं

सजायी हमने है बज़्मे-हुनर अब
हुनर दिन रात मेम्बर देखते हैं

घरों की बदगुमानी साथ आयी
परेशाँ सारा दफ़्तर देखते हैं

बहुत आसाँ है बहुओं की हिफ़ाज़त
इन्हें बेटी बनाकर देखते हैं

बुढ़ापा हमसफ़र जबसे हुआ है
परेशाँ घर को अक्सर देखते हैं

सुनो अब जाम में हम फँस गए हैं
चलो बस से उतर कर देखते हैं

मुसलसल जीना मुश्किल हो रहा है
तो अब क़िस्तों में मरकर देखते हैं

'कँवल' प्यारी है ये उर्दू ज़बां भी
ग़ज़ल इसमें भी कह कर देखते हैं

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन : 27 फ़रवरी, 2014

***

न कोई लालो-गौहर देखते हैं
वफ़ा, इख़्लास दिलबर देखते हैं

उसे इक बात कह कर देखते हैं
ख़फ़ा होने का मंज़र देखते हैं

हसीं हैं ज़ुल्फ़ो-लब, रूख़्सार, आँखें
इन्हें आँखों में भर कर देखते हैं

मैं उनको देख़ता हूँ हसरतों से
मुझे वो बन-सँवर कर देखते हैं

हैं बादल झूमते आँखों में मेरी
जब आँखें तर-ब-तर कर देखते हैं

जिन्हें हमने दिया राहत का गुलशन
हम उन हाथों में पत्थर देखते हैं

वुफ़ूरे-तिश्नगी पल-भर का मेहमाँ
क़रीब अपने समंदर देखते हैं

प्रदूषित नर्मदा, गंगो-जमन हैं
कोई तज्वीज़ बेहतर देखते हैं

नहीं राहतरसाँ यादों का बिस्तर
चलो करवट बदल कर देखते हैं

उन्हें हम देखते हैं मुस्कुरा कर
हमें वो मुस्कुरा कर देखते हैं

नहीं है बेसबब उनकी मुहब्बत
कँवल' उनको परख कर देखते हैं

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन : महाशिवरात्रि 27 फ़रवरी, 2014

***

मेरे दोस्त पल में ख़फ़ा हो गये
मैं हैराँ हूँ क्या से वो क्या हो गये

गवाहों को पैसे मिले इस क़दर
फ़रिश्तों के क़ातिल रिहा हो गये

जो शोहरत की तख़्ती हवा ले उड़ी
पता, नाम सब लापता हो गये

दवा मौत के दिन मिली ही नहीं
दुआ के असर भी फ़ना हो गये

खिलौने भी मिट्टी के सस्ते कहाँ
ग़रीबों के मन बेमज़ा हो गये

ख़मोशी है पसरी हुई शहर में
अज़ाँ, शँख सब बेसदा हो गये

सियासत के दिन लौट आये 'कँवल'
जो थे बेवफ़ा, बावफ़ा हो गये

बह्र : बह्रे-मुत़क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 28 फ़रवरी, 2014

***

रंगरलियाँ वो मनाने को तहख़ाने में मिले
बेटे के साथ बाप भी इक बाने में मिले

अब धूप नर्म हो गई गुस्सा उतर गया
कुछ लोग हुस्ने-शाम को समझाने में मिले

मेरी ज़रूरतों ने है ली छीन आन बान
मेरे ज़मीरो-रुत्बा सियहख़ाने में मिले

दस्तक तो दी थी वक़्त ने कहते ख़ुशआमदीद
तुम तो अना की ज़िद को ही समझाने में मिले

यूँ ख़ुद में खो गये कि पता ही नहीं चला
वीराने में मिले न सनमख़ाने में मिले

गावों की मुख़लिसी हुई गुम शहर में 'कँवल'
कुछ लोग ये लिखाते हुए थाने में मिले

बह्र : बह्रे-मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
सृजन : 1 मार्च, 2014

***

मुझे ज़िन्दगी ने लुभाया बहुत
कोई देर तक याद आया बहुत

जुदा हो के गो तिलमिलाया बहुत
तेरे वस्ल पर खिलखिलाया बहुत

न क़ानून का डर, न थी कुछ हया
गुनहगारों ने क़हृ ढ़ाया बहुत

न दस्तार, नै सर सलामत रहा
तमन्नाओं ने बरग़लाया बहुत

बहुत मेहरबाँ थे सभी रहनुमा
बस इक वर्ग ही उनको भाया बहुत

नहीं थी कोई लहर जिस शख़्स की
उसे मीडिया ने दिखाया बहुत

अजब डर लुगाई का बेटे को था
जो उसने पिता को रुलाया बहुत

मुझे आज़माने की फ़ुर्सत कहाँ
मगर आपने आज़माया बहुत

तसव्वुर जुदाई का जब भी हुआ
तेरे वस्ल को गुनगुनाया बहुत

अदालत रसूख़ों पे चलती रही
उसे मुजरिमों ने छकाया बहुत

फ़क़ीरों की सोहबत मुझे भा गई
कि खोया ज़रा-सा तो पाया बहुत

बहुत ख़ूबसूरत थे मिटटी के घर
मगर बारिशों ने गलाया बहुत

गुलों पे वो शबनम टपकना 'कँवल'
मेरी आँखों में झिलमिलाया बहुत

बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 14-16 मार्च, 2014

***

नशे में चूर होना चाहती है
वफ़ा मख़्मूर होना चाहती है

ठहरती है कहाँ बेग़ाम ख़ुशी की
ये पल में दूर होना चाहती है

मसर्रत रूबरू है ज़िन्दगी के
ये भी मसरूर होना चाहती है

मज़े में नस्ल-ए-नौ है झूठ कह कर
ये कब मंसूर होना चाहती है

न है परहेज़ कुछ रुसवाइयों से
ये रुत मश्हूर होना चाहती है

ये है तहज़ीब भी, इसको संभालो
ये उर्दू दूर होना चाहती है

'कँवल' मुझको भी अब फ़ुर्सत कहाँ है
वो भी माज़ूर होना चाहती है

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन : 25 मार्च, 2014

* * *

कौन कहता है ये झमेला है
ज़िन्दगी ख़ुशबुओं का मेला है

सब ख़रीदार फूल ख़ुशबू के
ख़ार बाज़ार में अकेला है

ग़ैर के दिल में जो उतरता रहा
उसको भी मेरे दिल ने झेला है

इक है स्कूल जिसमें इक बच्चा
पुस्तकों का लगाये ठेला है

अब सियासत में ढल रही है ज़बाँ
नीम पर चढ़ रहा करेला है

डायबेटिज़ से दूर रहने को
बाग़ में नारी-नर का रेला है

एक अडवाणी एक मोदी हैं
इक गुरु है तो एक चेला है

पेश करता है फल उन्हें भी 'कँवल'
जिनके हाथों में सख़्त ढेला है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 30 अप्रैल, 2014

* * *

रिश्ते रिसते रह जाते हैं
कल तक कल को दुहराते हैं

चिथड़ों में यौवन की उलझन
मॉडल कैसे इतराते हैं

चीख़ हवेली से उठती है
ख़्वाब ही ख़्वाब को दफ़नाते हैं

धूप का ग़ुस्सा कम होते ही
शाम को चेहरे खिल जाते हैं

हार हैं जाते थान तो लेकिन
गज़ भर भी न लुटा पाते हैं

उन्हें मुहब्बत क्यों मिलती है
जो न मुहब्बत कर पाते हैं

आँखों में पानी रखने को
आँखों आँखों शरमाते हैं

ग़ैर के दिल में उतरने वाले
दिल में कहाँ वो उतर पाते हैं

ख़ुद से ज़्यादा जग के हों जो
सबको 'कँवल' वो बहुत भाते हैं

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन
सृजन : 1 मई , 2014

* * *

ज़ुल्फ़ गालों पे बिखरने को ग़ज़ल कहते हैं
यार के सजने संवरने को ग़ज़ल कहते हैं

मुत्तला वो जो इशारों में बड़ी बात कहे
दिल की गलियों से गुज़रने को ग़ज़ल कहते हैं

शे'र वो इल्मे-नसीहत की हो ख़ुशबू जिसमें
ख़ुद-ब-ख़ुद अपने सुधरने को ग़ज़ल कहते हैं

उसके बन्दों से मुहब्बत को तरन्नुम कहिये
याद अल्लाह की करने को ग़ज़ल कहते हैं

ख़ुद जिये, औरों को जीने दे वही मक़ता है
रंग में भंग न करने को ग़ज़ल कहते हैं

बेसबब बातों ही बातों में हसीं चेहरों के
डूबने और उभरने को ग़ज़ल कहते हैं

अपने आपे में रहो ख़ुशियों के तूफ़ाँ में 'कँवल'
आंच में ग़म की निखरने को ग़ज़ल कहते हैं

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन
सृजन : 31 अक्टूबर, 2014

***

है मुहब्बत जो तेरे दिल में वही इस दिल में है
चाशनी आवाज़े-दिल की नग़मा-ए-महफ़िल में है

तुम अदब से सर झुकाओ, पेश अपना दिल करो
देखो क्या अज़्मे-जवां, क्या बांकपन क़ातिल में है

इस सुनहरी धूप की गुस्ताख़ियाँ तो देखिये
सीम-तन ज़ोहरा-जबीं क्यों कश्ती-ए-साहिल में है

कुछ न कुछ नायाब तोहफ़े देते रहिये ज़ीस्त को
कौन कहता है शुमार अपना किसी बुज़दिल में है

हुस्न की रानाइयां जलवानुमा हैं नेट पर
इस मुहज्ज़ब दौर की तहसील इस हासिल में है

सीमो-ज़र आसाइशे-अह्ले-हुनर का है नसीब
कायनात अपनी फ़क़त इक कासा-ए-साइल में है

मील के पत्थर की ख़ुशबू से बढ़ो आगे 'कँवल'
नश्शा-ए-फ़िक्रे-अमल तो दूर की मंजिल में है

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 31अगस्त,2015

***

कहीं वहशतनुमां अंगड़ाइयाँ हैं
कहीं ख़य्याम की चौपाइयाँ हैं

मुहब्बत में बुलंदी पर्वतों की
समुन्दर की तरह गहराइयाँ हैं

किसी के हौसले, हिम्मत के पीछे
किसी के हुस्न की रानाइयाँ हैं

मेरे होंठों पे हैं ग़मगीन दोहे
तुम्हारे चारसू शहनाइयाँ हैं

तुम्हारे साथ है महफ़िल की रौनक़
हमारे साथ बस तनहाइयाँ हैं

तुम्हारे साथ हैं ख़ुशनाम बस्ती
हमारी साँसों में रुस्वाइयाँ हैं

सियासत झूमती है अप्सरा बन
फ़िज़ा में रिश्वती पुरवाइयाँ हैं

सदी की नेकनामी, ख़ुशख़यााली
गुज़श्ता लम्हों की परछाइयाँ हैं

कमल खिलने की इच्छा है सभी की
'कँवल' इस झील में तो काइयाँ हैं

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
सृजन : 13 अक्टूबर,2015

***

क़हक़हों के दिये जलाओ ना
एक दिलकश ग़ज़ल सुनाओ ना

जो परेशान कर दे नज़रों को
वैसी दस्तक को भूल जाओ ना

ज़िद के कपड़ों में दफ़्न तो न करो
मैं क़रीब आया, तुम भी आओ ना

तन की ख़ुशबू से मन बहकता है
मन न बहके वो कर दिखाओ ना

सारे मुद्दे भुला के बैठ गये
इस सियासत पे मुस्कुराओ ना

और बाँटो हमारे कुनबे को
अपने कुनबे के गीत गाओ ना

घर निगाहों में और सफ़र में क़दम
कैसी उलझन है, कुछ बताओ ना

तुमसे मिलकर ही चैन मिलता है
ऐरे-ग़ैरे से अब मिलाओ ना

बेसबब हैं, फ़ुज़ूल हैं ख़ुशियाँ
तुम 'कँवल' जाओ, जाओ, जाओ ना

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 13 अक्टूबर,2015

***

मेरे मंसूब होने के क़िस्से
कामयाबी के हैं तेरे चर्चे

बेख़बर तीरगी के दर्द से है
शमअ-ए-महफ़िल जलायी है जिसने

एक कोहराम-सा उठा घर में
उसकी दस्तक है मेरे दरवाज़े

पास था दिल जो दूर था कोई
कोई पास आया, दिल गया उड़ के

रंग और नूर की नुमाइश है
शाहराहों पे मेले ही मेले

जग तो हँसता है बेमुरव्वत-सा
तेरी फ़ुर्क़त में हम हँसे न हँसे

चहचहा उट्ठा है ये घर सारा
मेरी बेटी के साथ हैं कमरे

तेरी यादों की शोख़ बस्ती में
हम लुटे रोज़, रोज़ रोज़ लुटे

बेनियाज़ी से है 'कँवल' बरहम
सामने हूँ, मेरी तरफ़ देखे

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 24 अक्टूबर,2015

***

तुम हमारे न हुए, कोई हमारा न हुआ
डूबते दिल को किसी का भी सहारा न हुआ

यूँ टपकता है तेरे नाम से हर ज़ख़्म मेरा
पर तुझे याद करूँ जग को गवारा न हुआ

ग़ैर का शहर, किसी ग़ैर का घर आँगन था
ख़्वाब अपना था मगर सेज हमारा न हुआ

देर तक ख़ुशबू बिखेरे, जले तिल-तिल के, बुझे
धूप-बत्ती की तरह कोई सितारा न हुआ

शाख़ से टूट के काँधे पे हवाओं के उड़ा
न मिली मिट्टी, ये गुलशन भी हमारा न हुआ

बरहना तन ने तो पहनी कई ख़ुशरंग क़बा
पर कफ़न जैसा तो मलबूसे–दिलारा न हुआ

मैंने सदियों की ख़ुशी मांगी दुआओं में 'कँवल'
पर मसर्रत का कोई लम्हा ख़ुदारा न हुआ

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 24 अक्टूबर 2015

***

आ गया इन्तिख़ाब का मौसम
मुल्क में इज़्तिराब का मौसम

वोटरों पर कबाब का मौसम
है नशे में शराब का मौसम

रहनुमाओं का है करम लोगो
दर-ब-दर फिरता ख़्वाब का मौसम

अब सियासत में रम गए शायर
खो गया है किताब का मौसम

क़त्ले-इख़लाक़ पर ही याद आया
सबको ये इन्क़लाब का मौसम

रेप का डर हिरन-सी आँखों में
बेटियों पर नक़ाब का मौसम

याद आया गुनाहगारों को
रहमते-बेहिसाब का मौसम

ऐश करता है इन निगाहों में
तेरे हुस्नो-शबाब का मौसम

रहनुमाई का शौक़ पाल 'कँवल'
आयेगा फिर सवाब का मौसम

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 25 अक्टूबर.2015

***

डट के पीछे मेरे पड़ा है कोई
और आगे तना खड़ा है कोई

मुन्तशर है दिमाग़ का दफ़्तर
दिले–नादाँ से जो लड़ा है कोई

सबकी हस्ती है, बेमिसाल हैं सब
कोई छोटा, न ही बड़ा है कोई

चुभता रहता हूँ सबकी आँखों में
जब से दिल में मेरे बसा है कोई

काँप उठता है हर घड़ी दो घड़ी
वक़्त के खौफ़ से लड़ा है कोई

किसी नायाब हीरे-मोती सा
मेरी दस्तार में जड़ा है कोई

बेच डालूँ ज़मीर मैं भी 'कँवल'
बस इसी बात पर अड़ा है कोई

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 24 अक्टूबर,2015

***

दिल की बस्ती में लूट-पाट न कर
मेरी दुनिया को यूँ उचाट न कर

मुफ़्लिसी है मगन घरौंदों में
उनके बर्बाद ठाट-बाट न कर

दे के ख़ुश रहते हैं फ़क़ीर हैं ये
पेश तू उनको राजपाट न कर

हो न मग़रूर तेरा कुछ भी नहीं
धूप में शबनमी ललाट न कर

शाहराहों पे गाड़ी चलने दे
उनको बाज़ार, मछली हाट न कर

बेच गाँधी को मत इलेक्शन में
ये सियासत तू राजघाट न कर

है ज़रूरी, ज़रूरतें कम हों
ख़्वाहिशों को 'कँवल' विराट न कर

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 31 अक्टूबर, 2015

***

मुझसे मिलता है अजनबी की तरह
मुझमें रहता है ज़िन्दगी की तरह

मेरे सज्दों में वो दमकता है
रब के अहसासे-बंदगी की तरह

बादशाहत थी जब अँधेरों की
साथ मेरे था चाँदनी की तरह

सारे इनआम उसने लौटाये
बेअदीबों की बुज़दिली की तरह

करते इज़्हारे-बरहमी खुलकर
जोश, ग़ालिब की शायरी की तरह

जिसका बर्ताव था अमीरों-सा
रूबरू है वो मुफ़लिसी की तरह

रंग सब ले उड़ा निगाहों से
अब वो आँखों में है नमी की तरह

फूल, शबनम, बहार, सुबह, हवा
सब रंगीली हैं सादगी की तरह

हार बैठा 'कँवल' मैं क्या करता
दुश्मनी देखी दोस्ती की तरह

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 25 दिसंबर,2015

***

दिन से डर कैसा हसीं रात से जी डरता है
ज़िन्दगी तेरे तिलिस्मात से जी डरता है

किसलिए, किसने, कहाँ, क्यों मुझे बर्बाद किया
छोड़िये ऐसे सवालात से जी डरता है

दोस्ती, प्यार, वफ़ा, उनके इनायातो-करम
रोज़ छलते हुए जज़्बात से जी डरता है

दबदबा, नाम, पहुँच, ओहदे थे सब मेरे वरक़
लेकिन आज उन सभी सफ़्हात से जी डरता है

कब बिछड़ जायेंगे, कब देंगे दग़ा क्या मालूम
गुनगुनाते हुए लम्हात से जी डरता है

सेक्युलर लोगों को आता है क़यादत का हुनर
मत ग़लत कहिये कि गुजरात से जी डरता है

जिन ख़यालों में रहा करता था मैं मस्त 'कँवल'
इन दिनों वैसे ख़यालात से जी डरता है

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 1 मई, 2016

***

उसको चिंता रहती है बस अपने मान और शान की
बात है सोची कब जो सम्मुख हैं उनके सम्मान की

मंचों से उपदेश दिए सुन्दर, मोहक पर ख़ुद अपने
जीवन में तो उतारी नहीं है बात कोई भी ज्ञान की

कब उपकार किये अपनों ने फूल दिये हैं कब बोलो
फिर आरोप के पत्थर क्यों पेशानी पर अनजान की

झरने, नदियाँ, बाग़-बगीचे, फूल सुगन्धित, मीठे फल
जय भारत माता की । जय । जय धरती हिंदुस्तान की

देश विदेश के धनवानों ने अति धन अर्जित कर समझा
सुख-संपद और धन-वैभव हैं वस्तु निरंतर दान की

चहको व्हाटस अप, ट्विटर पर या मगन रहो तुम फ़ेसबुक पर
बस ये सनद ही बची है सुरक्षित कवियों के उत्थान की

नाम, प्रतिष्ठा, पद, मर्यादा, इक पल में ही हवा ले उड़ी
हैं मेहमान 'कँवल' ये सब तो वस्तु नहीं अभिमान की

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मक़्तूअ महज़ूफ़
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
सृजन : 24 अप्रैल, 2016

****

किसी की आंखों में बेहद हसीन मंज़र था
मेरा बदन था जज़ीरा वो इक समुंदर था

वो जलते पंख लिये बढ़ रहा था मेरी तरफ़
मेरी रगों में ठिठुरता हुआ दिसंबर था

जो एक जुगनू-सा बुझता रहा, दमकता रहा
वो अजनबी तो शनासाओं से भी बेहतर था

उदास सूर्यमुखी खो गई थी सूरज में
थकन से चूर मगर रौशनी का बिस्तर था

बराये-नाम तो पानी था उसके चारों तरफ़
मगर जो ठहरा तो सहरा में वो शनावर था

अजीब बात बताई है जोगनों ने हमें
वो बूढ़ा साधू नहीं ख़ौफ़नाक ख़ंजर था

'कँवल' थीं तेज़ हवायें मेरे तअक़्क़ुब में
मै अपने वक़्त का जलता हुआ कलेंडर था

बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 2 जनवरी,1982

***

लफ्ज़ मैं और तुम मआनी हो
दोस्ती हो तो ये कहानी हो

दिल में कोई न बदगुमानी हो
हम पे ईश्वर की मेहरबानी हो

मुस्कराहट तो देन है रब की
सबके चेहरे पे ये निशानी हो

मैं कहूँ तो तुम्हारा क़िस्सा कहूँ
तुम कहो तो मेरी कहानी हो

सुन के उर्दू ज़बान लगता है
जैसे तहज़ीब ख़ानदानी हो

कर के ग़ुस्सा बिगाड़ मत चेहरा
रुख़ पे अम्नो-अमां का पानी हो

अपनी तुलना किसी से मत कीजे
जो भी हैं उनकी क़द्रदानी हो

दास्ताने-'कँवल' सुनाऊँ जब
चाँद हो, रात हो, जवानी हो

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 19 फ़रवरी, 2017

***

सुनी है सभी की मगर की है मन की
है शोहरत बहुत मेरे दीवानेपन की

सुलगता रहा आँच पर उसके तन की
नदी खो गई उसमें मेरे बदन की

सँभाला-सँभलकर ही पहना, उतारा
कहानी है ये जिस्म के पैरहन की

ख़ुशी, नींद, सेहत न भूख उसके वश में
ये औक़ात है दोस्तो! आज धन की

सियासत मगन है मिले वोट कैसे
किसे फ़िक्र है आज अपने वतन की

एलर्ज़ी मुझे हो गई व्हाटसअप से
है क़ीमत बहुत इसकी चाहत, लगन की

जवानों के सर पर हो पत्थर की बारिश
है कैसी फ़िज़ा आज हुब्बुल-वतन की

अभी तक 'कँवल' लोभ लालच न छूटा ?
पता है ? ये है उम्र चिंतन भजन की

बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन सालिम
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
सृजन : 19 फ़रवरी,2017

* * *

तेरे बिस्तर पे कोई सोता है
घर तेरे ख़्वाब का डुबोता है

सब अमीरों की मय्यतों में दिखें
कब ग़रीबों को कोई ढोता है

दिल जलाने का ख़्वाब ख़्वाब रहा
वो ख़यालों में अब भी रोता है

धूप है, शबनमी लिबास बदल
किसलिए जाँ से हाथ धोता है

पास दिल था, न जब यहाँ तुम थे
जब यहाँ तुम हो, दिल न होता है

मैं भी उसका कहाँ हुआ ? वो भी
साथ रह कर मेरा न होता है

धूप-बत्ती-सा पारा पारा जल
ख़ुशबुओं से किसे भिगोता है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 22 फ़रवरी, 2017

***

मुझको मुझसे जुदा नहीं करता
आइना ये ख़ता नहीं करता

दर्दो-ग़म हो कि मौज-मस्ती हो
कोई शिकवा गिला नहीं करता

मुंसिफ़ी की नज़र से है वाक़िफ़
'हो बरी' इल्तिजा नहीं करता

दुश्मनी खुल के वो निभाता है
दोस्त बन कर दग़ा नहीं करता

फ़ासिलों से है मुझको फुसलाता
वस्ल का फ़ैसला नहीं करता

रब की मर्ज़ी डुबा दे, पार करे
फ़ैसला, नाख़ुदा नहीं करता

सब नवाज़िश करम बुज़ुर्गों का
कुछ कोई देवता नहीं करता

रंग में है हमारा 'रंगे–हुनर'
इल्म किस का भला नहीं करता

हर मुसव्विर का शाहकार 'कँवल'
म्यूज़ियम में सजा नहीं करता

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 17 अप्रैल,2017

***

'आदमी बुलबुला है पानी का'
हौसला नाम है जवानी का

ज़िद पे दफ़्तर है बदगुमानी का
हो भला उनकी हुक्मरानी का

मोतियों-सा बिखरना क़िस्तों में
फ़र्श पर अर्श की कहानी का

मौत तरसाती रहती है उसको
जिसको शिकवा है ज़िन्दगानी का

रोज़ो-शब माहो-साल से गुम है
तज़्किरा इश्क़ की कहानी का

ख़ुद को खोकर तुझे न पाऊँगा
सच यही है सराये -फ़ानी का

'डेट' पर उनसे मिल के ये जाना
मोल है उनकी शादमानी का

न ख़ुशी है न रंजो-दर्द 'कँवल'
फ़ानी दुनिया की पासबानी का

'डेट' : प्रेमियों के मिलने जुलने की नियत तिथि
बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 18 अप्रैल, 2017

***

हम ख़ाकनशीनों को अब आराम नहीं है
और शहर के हाकिम को ये इल्हाम नहीं है

ये इश्क़ का ग़म, गर्दिशे-अय्याम नहीं है
सब जानते हैं इसको ये गुमनाम नहीं है

वहशत है निगाहों में हवस दिल में है बरपा
राधा नहीं, मीरा नहीं, घनश्याम नहीं है

वैसे तो तेरी यादों की ख़ुशबू भी है लेकिन
जो साथ तेरे गुज़री थी वो शाम नहीं है

जो नोट चलन से हुए बाहर, हैं वो ग़मगीं
क्यों आम घरों में कोई कुहराम नहीं है

जो ताजिरे-दहशत हैं, जो हैं अहले-सियासत
मातम में हैं डूबे हुए कुछ काम नहीं है

नीतीश का सूबा है 'कँवल', हैं सभी वाक़िफ़
साग़र में मेरे बादा-ए-गुलफ़ाम नहीं है

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन
सृजन : 11 नवम्बर, 2016

***

अपने अंदाज़ से गँवाता हूँ
लम्हे-लम्हे को आज़माता हूँ

हादिसा मौत का सुनाता हूँ
ज़िन्दगी को क़रीब पाता हूँ

ज़िन्दगी की बिसात फैली है
मौत की चाल से बचाता हूँ

लाल बत्ती का थम गया कल्चर
शुभ समाचार मैं सुनाता हूँ

जब तमन्ना जवान होती है
वक़्ते-इज़्हार लड़खड़ाता हूँ

ज़िन्दगी जब सवाल करती है
मौत को लाजवाब पाता हूँ

ग़म कोई बेहिसाब देता है
मैं ख़ुशी से उसे चुकाता हूँ

ज़िन्दगी ख़्वाब-ख़्वाब मिलती है
उसकी ताबीर मैं बताता हूँ

मुफ़लिसों-सा लिबास है मेरा
रोज़ पैवंदे-ग़म लगाता हूँ

ज़ुल्फ़ बिखराये बाम पर है वो
उसकी गलियों में मुस्कुराता हूँ

शोर को जोड़िये न मज़हब से
मैं 'कँवल' सबको ये बताता हूँ

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 19 अप्रैल, 2017

* * *

बासंती ग़ज़ल

अब जाड़े का हुआ है अंत
बाग़ों में इतराया बसंत

कलियों पर गदराया यौवन
फूलों में ख़ुशबू हैं अनंत

आँखों में काजल का संग
सम्मोहन होंठों से तुरंत

जागी मिलन की दिल में आस
अब है वियोग का निश्चित अंत

ज़िद के आँचल को सरकाये
खुशियाँ हैं बिस्तर पे अनंत

चिड़ियाघर में कोयल ढूंडो
मोहक खग पटना से उडंत

स्वागत है तुम्हारा ऋतुराज
रह न सकेगा 'कँवल' अब संत

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़तूअ मक्सूर
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ाअ
सृजन : 2 फ़रवरी, 2018

***

मौत है नग़मासरा अब ज़िन्दगी ख़ामोश है
ख़ुशनवा दिल देखिये नफ़रत के हम-आग़ोश है

चल रहा हूँ मंज़िले-मक़्सूद पाने के लिए
या ख़ुदा ! क़ायम रहे दिल में अभी जो जोश है

क्या मिलेगा लुत्फ़े-साग़र ऐसे में कहिये भला
रिंद हैं बेख़ुद अलग साक़ी अलग मदहोश है

रह के ख़ारों में भी कैसे मुस्कुराता है गुलाब
जानने को राज़ ये ख़ुशबू भी हम-आग़ोश है

ज़ख़्म-हाए-ज़िन्दगी से दिल मेरा शाकी नहीं
कल भी ये ख़ामोश था और आज भी ख़ामोश है

इस जहाँ में ज़िन्दगी बेकैफ़ सी पायी 'कँवल'
जाने किस दुनिया में रंगे-ज़िन्दगी रूपोश है

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 3 दिसंबर,1971

***

ध्वंस का वंध्याकरण अब कीजिए
शांति को कुछ आवरण भी दीजिये

ज़हर हरदम घोलिये मत देश में
दिल मिलें, वातावरण वो दीजिए

झूठ में है सच महारत आपको
सत्य का इक आचरण भी कीजिए

दर्द की शिद्दत हो या ज़्यादा ख़ुशी
प्रेम को इक व्याकरण भी दीजिए

किसलिए कश्मीर दहशत में है अब
इसके बारे में भी सोचा कीजिये

रोज़ होती है क़लम सरहद पे क्यों
आदमीयत पर बयाँ भी दीजिये

हो गये रूख़्सत कँवल आनंद क्षण
दर्द का पाणीग्रहण अब कीजिए

बह्र : बह्रे-रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 25 फरवरी, 2018

***

चिराग़ों को है आज आंधी का डर
जलें गर न ये तो हो कैसे सफ़र

ये पर्यावरण, ये प्रदूषित नगर
ये बच्चे, ये स्कूल, और सड़क बेशजर

हुआ गर्मियों का सफ़र अब शुरू
अभी से ही ए.सी. हुए बेअसर

ठिकाना, न दाना, न पानी जहाँ
परिंदों के किस काम के वो नगर

हिमायत का कोई सबब तो नहीं
अगर मंदिरों मस्ज़िदों से हो डर

दनादन चलीं, धोखे से गोलियाँ
ये विद्या के मंदिर भी हैं पुरख़तर

तुम्हें याद शायद मैं आऊँ नहीं
'कँवल' याद आओगे तुम उम्र-भर

बह्र : बह्रे-मुत़क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 26 फ़रवरी, 2018

***

दूर करिए अधूरापन मेरा
आज भर दीजिए ये मन मेरा

उसकी ख़ुशबू थी, घर, चमन मेरा
रूह उसकी, लिबास, तन मेरा

मेरे कांधे पे थी थकन उसकी
उसकी नज़रों में बांकपन मेरा

आबे-ज़मज़म था उसकी आंखों में
शुद्ध मन से था आचमन मेरा

चाँदनी को सफ़ेद टब भाया
पेश 'श्री देवी' को नमन मेरा

साफ़ से साफ़ उजला टब था मैं
उसने चूमा धवल वसन मेरा

लोभ लालच 'कँवल' को ले डूबे
वरना होता न आगमन मेरा

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 27 फ़रवरी, 2018

***

दिल का मौसम, तेरी गलियाँ, दिन सुहाने सोचकर
हम बहुत हैराँ हुए, क़िस्से पुराने सोचकर

ग़म के दस्तरख़्वान, प्याले दर्द के, लब पर हंसी
रतजगे में ख़ुश हूँ दिल के ताने-बाने सोचकर

बंद थी मुट्ठी, हथेली पर किसी का नाम था
वो परेशाँ था बहाने पर बहाने सोचकर

झील पोखर में खिलें लेकिन समुन्दर में नहीं
मैं हूँ हैरत में कमल के आशियाने सोचकर

मन किसी से ऊब जाये और किसी से भर न पाये
कुछ भी कह पाऊँ नहीं दिल के बहाने सोचकर

मोगरा के फूल उजले राह में बिछ जायेंगे
चल पड़ी माहे-लक़ा टब में नहाने सोचकर

मिलते हैं सब अपने-अपने काम की ख़ातिर 'कँवल'
मैं बदल पाया नहीं अपने ठिकाने सोचकर

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 28 फ़रवरी, 2018

***

दिल की रानी हो जा तू
आज किसी की हो जा तू

हल्की-फुल्की हो जा तू
रात की मस्ती हो जा तू

शाम सँवर नहीं पाती है
धूप सुनहरी हो जा तू

देह का बिज़नेस नेट पे है
तेज़ डिलिवरी हो जा तू

मैं इक मूरत बन जाऊँ
छेनी हथौड़ी हो जा तू

देश पकौड़े बेचेगा
ऐश की बस्ती हो जा तू

तुझको लोग दुआ देंगे
एक रुपल्ली हो जा तू

दारू बंद हुई तो क्या
चाय की चुस्की हो जा तू

मैं बन जाऊं रिमोट सनम
चैनल जैसी हो जा तू

भीड़ है रोटी पानी की
हलवा पूरी हो जा तू

मज़दूरों के काम भी आ
बुर्ज हवेली हो जा तू

बैंक बनूँ मैं पीएनबी
नीरव मोदी हो जा तू

बरसाने में मस्त 'कँवल'
श्याम की टोली हो जा तू

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ महज़ूफ़
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
सृजन : 27 फ़रवरी, 2018

***

मुफ़्त मिली पहचान कहाँ हूँ
मुंह मांगा वरदान कहाँ हूँ

साख़ है मेरी अपने दम पर
ग़ैरों का एहसान कहाँ हूँ

मुझसे ही है शाम की रौनक़
रात कोई सुनसान कहाँ हूँ

ख़ुशबू हूँ मैं ही जीवन की
ज़ुल्म का रौशनदान कहाँ हूँ

सब करते हैं मुझसे उलफ़त
नफ़रत का बाग़ान कहाँ हूँ

लोग भरोसा कर लेते हैं
सरकारी ऐलान कहाँ हूँ

झुंझलाऊं आईने पर ही
इतना भी नादान कहाँ हूँ

घर मेरा, घरवाला हूं मैं
घर आया मेहमान कहाँ हूँ

इतराता हूं बादे सबा सा
आँधी या तूफ़ान कहाँ हूँ

इज़्ज़त करता हूं औरत की
मैं कोई हैवान कहाँ हूँ

ठेस लगे, एहसास नहीं हो
इतना भी बेजान कहाँ हूँ

लोग समझ पाये नहीं मुझको
मैं भी 'कँवल' आसान कहाँ हूँ

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन
सृजन : 7 मार्च 2018

* * *

बेटियों की बहुत ज़रूरत है

इनके दम से घरों में जन्नत है
अन्न भी इनकी ही बदौलत है

शामिले-रंजो-ग़म मसर्रत है
नेक बीवी ख़ुदा की ने'मत है

वो शरीके-हयाते-फ़ानी भी
दह्र की खुशियों की ज़मानत है

है बहन, बीवी, बेटी, पोती, माँ
इनसे ही दुनिया ख़ूबसूरत है

बन के माँ है सलामती की दुआ
बन के बहना ये नेक चाहत है

तोतली बोली, नाज़ नखरों में
बेटी हर जश्न की महूरत है

उंगलियों को पकड़ के पोती भी
दादी-दादा की करती ख़िदमत है

किस महकमे में कामयाब नहीं
आज कमतर कहाँ ये औरत है

जन्म इनको ज़रूर दीजे 'कँवल'
बेटियों की बहुत ज़रूरत है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 6 मार्च, 2018

***

कहीं ऐसा न हो ये ज़िन्दगी साग़र में ढल जाए
तुम्हारी याद खो कर ये हवस की सम्त चल जाए

न बन जाये कहीं ये इंतज़ारे-यार ही क़ातिल
कहीं ना दीदा-ए-मह्जूर से ये दम निकल जाए

हमारी बज़्मे-हस्ती में नहीं कोई भी रंगीनी
मुनासिब है यही साक़ी कि दौरे-जाम चल जाए

जहां वाले मुझे मेरा मक़ामे-ज़िन्दगी दे दें
कहीं रस्मे-शराफ़त को न बेकस दिल कुचल जाए

उन्हें मैं ढूँढता रहता हूँ ऐसा सोच कर दिल में
कि उनके मिलने से शायद मेरी क़िस्मत बदल जाए

अभी तक ऐ चमन वालो ! 'कँवल' भूला नहीं उनको
नहीं मुमकिन मये-रंगीं से उसका दिल बहल जाए

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन सालिम
अरकान : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन
सृजन : 21 दिसंबर,1971

***

दुज़दीदा निगाही से नहीं कोई शिकायत
हालात की राहों में लुटे अहले-मुहब्बत

ऐ देखने वालो ! ये मेरी सादगी देखो
क़ातिल से भी रखता हूँ मैं उम्मीदे-इनायत

अंजान था हर शख़्स कहानी से हमारी
हासिल हुई तुझसे ही हमें अज़्मतो - शोहरत

यादों की महकती हुई ज़ंजीरे-तिलाई
पहने हुए है आज भी नाकाम मुहब्बत

अफ़साना सुहाना है 'कँवल' इश्क़ का लेकिन
कुछ भी नहीं इस राह में जुज़ अश्के-नदामत

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन
सृजन : 23 अगस्त, 1974

***

अभी तक हैं दरे–एहसास पर लम्हे गिराँ कितने
तरसते रह गए मरहम को ज़ख़्मे-जाविदाँ कितने

गुलिस्तानों में होते हैं गुले–आतिश-फ़िशाँ कितने
सितम है ख़ुद ही बन जाते हैं गुलचीं बाग़बाँ कितने

मैं लेकर पारा-पारा ज़िन्दगी कब तक फिरूँ तनहा
बता ऐ दुश्मने-जां अब हैं तेरे इम्तिहाँ कितने

न जाने क्यों मेरी क़िस्मत में हैं तारीकियाँ इतनी
अगरचे उनके दामन में हैं माहो-कहकशाँ कितने

निकल आने दो यारो वक़्त का सूरज घटाओं से
हमें भी देखना है वो रहेंगे बदगुमाँ कितने

जो मिलता है वो हाथों में लिये पत्थर ही मिलता है
हुजूमे-मेहरबां में भी हैं ये नामेहरबाँ कितने

'कँवल' फ़स्ले-ख़िज़ाँ का मुझपे ये एहसान है वर्ना
बहारों में बिखर कर रह गए हैं गुलसिताँ कितने

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन सालिम
अरकान : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन
सृजन : 22 अप्रैल,1974

***

बात दिलबर की दिलकशी की है
है अहम जब कि ये ज़रा-सी है

मस्त आँखें ग़ज़लसरा हैं अभी
साफ़ है दिल ने शाइरी की है

मुल्तवी करना उनकी है फ़ितरत
इल्तिजा दिल ने बारहा की है

राम मंदिर वहीं बनायेंगे
बात कुछ भी नहीं नयी की है

मेरी आराधना, इबादत तू
ज़िन्दगी ! तेरी बन्दगी की है

साल उन्नीसवां लगा है इसे
रात इक्कीसवीं सदी की है

है ख़ुमारी अभी दिसम्बर की
पहली तारीख़ जनवरी की है

हुस्न के पेचो-ख़म कँवल जाने
आख़िर उल्फ़त तो उसने भी की है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 2 जनवरी, 2019

*****

इक नशा-सा ज़ेह्न पर छाने लगा
आपका चेहरा मुझे भाने लगा

चाँदनी बिस्तर पे इतराने लगी
चाँद बाँहों में नज़र आने लगा

रूह पर मदहोशियाँ छाने लगीं
जिस्म ग़ज़लें वस्ल की गाने लगा

तुम करम-फ़रमा हुए सद-शुक्रिया
ख़्वाब मेरा मुझको याद आने लगा

रफ़्ता-रफ़्ता यास्मीं खिलने लगी
मौसमे-गुल इश्क़ फ़रमाने लगा

ज़ुल्फ़ की ख़ुशबू, शगुफ़्ता लब 'कँवल'
मंज़रे–पुरकैफ़ दिखलाने लगा

बह्र : बह्रे-रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
सृजन : 29 फ़रवरी, 2004

****

ग़म छुपाने में वक़्त लगता है
मुस्कुराने में वक़्त लगता है

रूठ जाने का कोई वक़्त नहीं
पर मनाने में वक़्त लगता है

ज़िद का बिस्तर समेटिए दिलबर
घर बसाने में वक़्त लगता है

जाने आने की बात मत कीजे
जाने आने में वक़्त लगता है

यक-ब-यक भूलना है नामुमकिन
भूल जाने में वक़्त लगता है

वो अभी बन-सँवर रही होगी
उसको आने में वक़्त लगता है

जाम पीते हैं जो नज़र से उन्हें
जाम उठाने में वक़्त लगता है

आज़मा मत, भरोसा कर मुझ पर
आज़माने में वक़्त लगता है

बेटियों को बचा के रखिए 'कँवल'
उनको पाने में वक़्त लगता है

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 14 अगस्त,2012

****

जो अब तक न पाया वो सब चाहिए
मुझे ज़िन्दगी का सबब चाहिए

ये मत पूछिए हमसे कब चाहिए
करम आपका रोज़ो-शब चाहिए

बहारों का मौसम बुलाने लगा
मुझे आपका साथ अब चाहिए

वफ़ा से हों रौशन दिए आँख के
तबस्सुम सजा सुर्ख़ लब चाहिए

हुनर नेकियाँ भूल जाने का हो
बदी याद रखने का ढब चाहिए

तरन्नुम, सलीक़ा, फ़न-ओ-फ़िक्र भी
ग़ज़ल में सुख़न बाअदब चाहिए

रहूँ साथ तेरे घड़ी दो घड़ी
ग़ज़ब है तमन्ना, अजब चाहिए

बदन में तमाज़त तेरे जिस्म की
मेरे होंठों पर तेरे लब चाहिए

नहीं दूर तक कोई इन्सां 'कँवल'
मेरी आरज़ू है कि रब चाहिए

बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
सृजन : 24 अक्टूबर,2012

****

जोबन के दरीचों पे कोई पर्दा नहीं था
उस शोख़ को जिस्मों की नुमाईश पे यक़ीं था

वो आरिज़ो–लब, वो घनी ज़ुल्फ़ें, खुले बाज़ू
ख़ुशबू का समंदर, मेरे साँसों के क़रीं था

आहट, कोई दस्तक, वो सिमटना, वो बिछड़ना
कुछ इसके सिवा और निगाहों में नहीं था

ख़ुशियों के दरो–बाम थे माज़ी के खंडर में
इमरोज़ की बस्ती में ग़म-आलूदा मकीं था

क़िस्तों में निगलता रहा किरनों का बवंडर
यादों का सफ़र बर्फ़ की बांहों में कहीं था

वो नाज़, वो अंदाज़, वो ग़मज़े, वो इशारे
ईमान की दौलत पे कहाँ मुझको यक़ीं था

दावत थी 'कँवल' उसकी तो हर शोख़ अदा में
पैकर नहीं, वो इश्क़ का इक अक्से–हसीं था

बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन
सृजन : 4 अप्रैल.1981

****

आइये मेहरबाँ और पास आइए
उलझनें ज़िन्दगानी की सुलझाइए

फ़ल्सफ़ा प्यार का कितना आसान है
जब मनाये कोई मान भी जाइए

ग़लतियों से सबक़ लीजिये रात-दिन
कामयाबी की राहों में खो जाइए

याद रखिये गुनाहों की बेबस घड़ी
नेकियाँ अपनी दरिया में डाल आइए

शर्म आँखों में हो और गुस्ताख़ियाँ
होंठ खामोश हों, गीत भी गाइए

बेटियों को जनम दीजिये फ़ख्र से
घर में बेटी बना कर बहू लाइए

मैं फ़रिश्ता नहीं, मैं हूँ इन्सां 'कँवल'
देवता जान कर पेश मत आइए

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन सालिम
अरकान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
सृजन : 1 नवम्बर,2012

****

फूल को ख़ुशबू, सितारों को किरन हासिल हो
सुब्ह को शाम से मिलने की लगन हासिल हो

अनसुने क़िस्सों को बेख़ौफ़ कथन हासिल हो
ग़म के एहसास को ग़ज़लों का सुख़न हासिल हो

आपसे मिल के मुझे लज़्ज़ते–गुलज़ार मिले
आपके घर को भी ख़ुशियों का चमन हासिल हो

मेरी फ़ुर्क़त में उदास आप कभी हों कि न हों
मेरी आंखों को जुदाई में चुभन हासिल हो

मुझको हासिल हो तेरी ख़ुशबू, तेरे साथ सफ़र
और तुझको मेरी चाहत का चमन हासिल हो

तेरे दीदार की ठंडक मुझे गर्मी में मिले
सर्दियों में तेरे गालों की तपन हासिल हो

गुनगुनाता रहे रिमझिम की फुहारों में 'कँवल'
बारिशों में तेरा भीगा-सा बदन हासिल हो

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन

****

गुज़रे मौसम का पता सुर्ख़ लबों पर रखना
अपनी आंखों में मेरे क़ुर्ब का मंज़र रखना

तुम गये साल-महीनों को सँजो कर रखना
याद आयेगी मेरी, याद बराबर रखना

बंद करना न तअल्लुक़ के दरीचे को कभी
तुम मुलाक़ात के आंगन को मुनव्वर रखना

अपनी सांसों में बसा लेना वफ़ा की ख़ुशबू
अपने जूड़े को गुलाबों से मुअ़त्तर रखना

एक दस्तक तुम्हें चौंकाती रहेगी अक्सर
इक दिया दिल के घरौदें मे जलाकर रखना

मेरे हिस्से में तबाही की घनी तल्ख़ी है
तुम लबे-शीरीं के अमृत को बचाकर रखना

एक जलता हुआ सूरज है मेरी ज़ात में क़ैद
तुम भी लहराता हुआ तन का समुन्दर रखना

गर्द जिस पर न महो-साल की जमने पाये
दिल की दीवार पे इक ऐसा कलेन्डर रखना

वो उभर आयेगी हाथों की लकीरों मे 'कँवल'
उसके मिल जाने का एहसास बराबर रखना

बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : जुलाई,1984

* * *

ये न कहिये भला नहीं होता
उसके होने से क्या नहीं होता

दिल हज़ारों बवाल करता हैं
तुम-सा जब दिलरुबा नहीं होता

सारे हालात के करिश्मे हैं
कोई अच्छा बुरा नहीं होता

उसकी बातें भी उसकी जैसी हैं
ये न कहना नशा नहीं होता

ज़िद का बिस्तर समेट लेता है
मेरा दिलबर ख़फा नहीं होता

हौसले मुजरिमों के बढ़ते हैं
जल्द जब फ़ैसला नहीं होता

दिल को दुनिया उजाड़ ही देती
गर तेरा आसरा नहीं होता

छोटा बच्चा सवाल करता है
जल्द क्यों वो बड़ा नहीं होता

दूर रहते हो तुम ख़यालों से
'जब कोई दूसरा नहीं होता'

लौट आया हूँ चार धाम से मैं
ऐसा पर हादिसा नहीं होता

लाश पे लाश और उस पे 'कँवल'
ऐसा भी रतजगा नहीं होता

बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
सृजन : 22 जून, 2013 (35 वीं परिणय वार्षिकी)

***

तेरे वस्ल की शोख़ चाहत से पहले
मैं तनहा था तेरी रिफ़ाक़त से पहले

न रंजो-अलम था, न थी ग़म की दस्तक
बहुत लुत्फ़ था तेरी चाहत से पहले

वफ़ा, प्यार, राहत, खुशी के ये मंज़र
न था कुछ तुम्हारी इनायत से पहले

न थी बेरुख़ी, फ़ासला भी नहीं था
अजब दिन थे तेरी रिफ़ाक़त से पहले

उदासी के दिन, बेनियाज़ी की रातें
थीं मुमकिन न, तेरी इजाज़त से पहले

बहुत सर्द बिस्तर था, कमरा था ठण्डा
तुम्हारे बदन की तमाज़त से पहले

बड़ा नर्मो-नाज़ुक है लहजा 'कँवल' का
कहे किसने शे'र इस फ़साहत से पहले

बह्र : बह्रे-मुत़क़ारिब मुसम्मन सालिम
अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
सृजन :30 अक्टूबर, 2012

स्पर्श की चाँदनी में शामिल ग़ज़लों की बह्रें और उनके अरकान

1. बह्र : बह्रे-ख़फ़ीफ़ मुसद्दस मख़्बून महज़ूफ़
   अरकान : फ़ाइलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
   पेज :37,38,44,50,57,63,67,68,79,84,85,87,88, 89,90,94,96,97,98,100,106,112,116,118, 124 =25

2. बह्र : बह्रे-मुज़ारे मुसम्मन अख़रब मक्फ़ूफ़ महज़ूफ़
   अरकान : मफ़ऊलु फ़ाइलातु मफ़ाईलु फ़ाइलुन
   पेज : 48, 51,75 = 03

3. बह्र : बह्रे-मुजास मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
   अरकान : मुफ़ाइलुन फ़इलातुन मुफ़ाइलुन फ़ैलुन / फ़इलुन
   पेज : 53,54,64,65,93= 05

4. बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन सालिम
   अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन
   पेज : 95,126 = 02

5. बह्र : बह्रे-मुत्क़ारिब मुसम्मन महज़ूफ़
   अरकान : फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़ऊलुन फ़अल
   पेज :56,58,74,76,105,119 = 06

6. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसद्दस सालिम
   अरकान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
   पेज : 46,69 = 02

7. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ महज़ूफ़
   अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
   पेज : 108 = 01

8. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ मक्सूर
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ाअ
पेज : 102 = 01

9. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन सालिम
अरकान : फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन फ़ाइलुन
पेज : 121 = 01

10. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन
पेज : 80,110 = 02

11. बह्र : बह्रे-मुतदारिक मक़्तूअ महज़ूफ़
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
पेज : 92 = 01

12. बह्र : बह्रे-रमल मुरब्बा महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
पेज : 47 = 01

13. बह्र : बह्रे-रमल मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन
पेज : 43,104,117 = 03

14. बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलातुन फ़ाइलुन / फ़ाइलान
पेज : 42,52,82,103,107 = 05

15. बह्र : बह्रे-रमल मुसम्मन मख़्बून महज़ूफ़
अरकान : फ़ाइलातुन फ़इलातुन फ़इलातुन फ़ैलुन / फ़इलुन
पेज : 55,59,60,66,81,86,91,122,123 = 09

16. बह्र : बह्रे-रजज़ मुसम्मन सालिम
अरकान : मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन
पेज : 134

17. बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन सालिम
अरकान : मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन मफ़ाईलुन
पेज :113,115 = 02

18. बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन मक़बूज़
अरकान : मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन मुफ़ाइलुन
पेज : 49 = 01

19. बह्र : बह्रे-हज़ज मुरब्बा महज़ूफ़
अरकान : मफ़ाईलुन फ़ऊलुन
पेज : 39 = 01

20. बह्र : बह्रे-हज़ज मुसद्दस महज़ूफ़
अरकान : मुफ़ाईलुन मुफ़ाईलुन फ़ऊलुन
पेज : 41,70,72,78,83 = 05

21. बह्र : बह्रे-हज़ज मुसम्मन अख़रब मकफ़ूफ़ महज़ूफ़
अरकान : मफ़ऊलु मफ़ाईलु मफ़ाईलु फ़ऊलुन
पेज : 62,99,114,120 = 04

नज़्में

*** होली ***

हल्के फीके रंग न भायें, डालो मुझ पर गहरा रंग
जो जीवन भर छूट न पाये रंग दो ऐसे रंग में अंग

आ ही रहे होंगे साजन, मस्ताना हवाएँ आईं है
कोई गोरी सोच में है खेलूंगी रंग प्रीतम के संग

मस्तों की टोली आई पिचकारी छुपाये हाथों में
बरस रहा है इक आँगन में ख़ूब अबीर, गुलाल और रंग

चिपक गई है चुनरी-चोली, अंग गुलाबी छलके है
ऐसा रंग खेला कान्हा ने राधा सोच के रह गई दंग

चली बसंती हवा, नशा छाया है सबके तन-मन पे
गाल दमकते, नयन बहकते, पी ली है हर एक ने भंग

क्या दिल पे क़ाबू हो कोई बतलाये इस मौसम में
अजब सुहाना पर्व है 'होरी', अजब निराले इसके ढंग

आज भी क्या रूठे ही रहोगे? प्रीतम दिन है होली का
आओ न हम भी होली खेलें, हमें लगा लो अपने अंग

तन-मन में लग जाय अगन जब उड़े गुलाल, बदन सिहरे
बेदर्दी अब तो आ जाओ मस्त हो गए ढोल-मृदंग

चलो मुहब्बत में हारा मैं, तुम ही जीत गए 'सावन'
आस लगाये बैठा हूँ आ डाल दे मुझ पर प्रीत का रंग

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मक़्तूअ महज़ूफ़
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
सृजन : 28 मार्च 1975 (होली)

* * *

ट्रैफ़िक जाम

ट्रैफिक जाम से राहत हो
आपको गर ये चाहत हो
सिर्फ़ क़तार में चलना हो
इधर-उधर न मचलना हो
शुरूअ में कुछ मुश्किल होगी
जल्दी फिर मंज़िल होगी
हेलमेट पहनो बाइक पर
बेल्ट लगा ही ड्राइव कर
डिजिटल हो या फ़िज़िकल हो
साथ में आर.सी डी-एल हो
पोल्यूशन की सनद रहे
इंश्योरेंस हो अप-टू-डे
सीधा जाना बीच में चल
एकाएक न लेन बदल
लेन बदल कुछ पहले ही
बाएं-दायें हो जो भी
एम्बुलेंस को जाने दो
दमकल आग बुझाने दो
सिग्नल लाल न पार करो
पार करो तो चलान भरो
जहाँ लिखा स्टॉप रुको
ज़ेबरा कभी न क्रॉस करो
पैदल चलने वालों पर
हरदम रक्खो एक नज़र

पैदल चलने वाले भी
रुक जाएँ, जो चले गाड़ी
धूल-धुएँ से बचाते हैं
पेड़ जो राह में आते हैं
सुख की छाँव ये देते हैं
लंग्स में अमृत भरते हैं
पेड़ न रस्ते के काटें
इनके कुछ दुख भी बाटें
हरा भरा रखिए रस्ता
जीवन से रिश्ता इनका

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ महज़ूफ़
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ा
सृजन : 19 दिसम्बर 2018

***

होली (एक मसनवी)

होली की बहारें आई हैं
मस्ती की फुहारें लाई हैं
फागुन का महीना नस-नस में
शालीनता ने तोड़ी क़समें
तन से मन तक अकुलाहट है
कानों में किसी की आहट है
चाहत है उसे इक मेहमाँ की
जो फ़िक्र करे तन की जाँ की
बाँहों में सरापा चेहरा हो
सिहरन का बदन पे पहरा हो
दस्तक दिल पर दिलदार की हो
मदहोशी में घर-बार भी हो
यौवन गदराया आँखों में
जी चाहे कोई हो बाँहों में
रंगीन मिज़ाजी में रंग-रंग
ग़ुस्साए जो आये उनके संग
ये ढ़ोल-मजीरे की टोली
रंगीन करे सबकी चोली
फूहड़ गाने भी गाते हैं
लोगों को खूब चिढ़ाते हैं
साजन को पास बुलाते हैं
रंगों से फिर नहलाते हैं
चेहरे पे रंग लगाते हैं
थोड़ी-सी धूम मचाते हैं
फिर साथ में सब हो जाते हैं
हर बात को फिर दुहराते हैं
रंग और अबीर गुलाल उड़ा
दिखलाते हैं मस्ती की छटा
हिन्दू-मुस्लिम की यारी है
यकजहती की फुलवारी है
सब धर्मों पर ये भारी है
झूमता हर नर-नारी है
सुन्दर मोहक मनभावन है
ये पर्व बहुत ही पावन है

बह्र : बह्रे-मुतदारिक मुसम्मन मक़्तूअ
अरकान : फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन फ़ैलुन
सृजन : 8 फ़रवरी 2018

***

पर्यावरण-संरक्षण

पर्यावरण, वातावरण में ज़हर अब मत छोड़िए
'मेहता नगेन्द्र' की काविशों की आप भी जय बोलिए

अब बोलिए नदियों में कूड़ा-कचरा न फेंके कोई
अब कारख़ानों के रसायन नदियों में मत फेंकिए

अब मूर्तियों का भी विसर्जन पोखरों में मत करें
अब तो प्रदूषित नालों का शुद्धीकरण कर लीजिए

तालाब पोखर में करें परहेज़ शैम्पू-सोप से
नदियों के घाटों पर तो अब मल-मूत्र करना छोड़िए

अब छोड़िए खेतों-बधारों में खुले में शौच भी
अब घर में अपने बंद शौचालय प्रयोग ही कीजिए

अब ओडीऍफ़ यानि खुले से मुक्त शौचालय की ही
बातें प्रचारित गावों, टोलों, वार्डों में कीजिए

अब जल ही जीवन है, उतारें ज़िन्दगी में रात-दिन
जल संचयन की सीख बच्चों को प्रतिदिन दीजिए

जब चाहिए तब खोलिए नाहक़ न हो बर्बाद जल
घर का हो या बाहर का हो नल को खुला मत छोड़िए

बस सोचिये कूएँ की लाइन चापाकल की भीड़ को
महिलाओं की पेशानी पर जल का तसव्वुर देखिए

ब्रश कर रहे नल चल रहा कीजे नहीं ऐसा कभी
साबुन लगाते वक़्त तो नल बंद ही कर दीजिए

भूगर्भ जल बस काम भर, बारिश के जल का संचयन
हरगिज़ प्रदूषित हो 'कँवल' ना जल शपथ ये लीजिए

बह्र : बह्रे-जज़ मुसम्मन सालिम
अरकान : मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन मुस्तफ़इलुन
सृजन : 21 नवम्बर 2018

***

कलवार ध्वज गान

कलवार का ये ध्वज है
कलवार का ये ध्वज है
फहराओ, झूमो, गाओ
हम एक हैं दिखाओ
नवपथ पे बढ़ते जाओ
दुनिया नई बनाओ

कलचुरी वंश के गौरव का है लाल रंग इस ध्वज में
केसरिया शाश्वत प्रतीक हिंदुत्व का इस सज ध्वज में

शान इसकी तुम बढ़ाओ
फहराओ, झूमो, गाओ
हम एक हैं दिखाओ

हल बलभद्र का आयुध, तीर-धनुष सहस्त्रार्जुन का
नीलाम्बर बलभद्र, वस्त्र राजेश्वर का केसरिया

संग इनके रम ही जाओ
और जश्न भी मनाओ
हम एक हैं दिखाओ

शांति का ये श्वेत रंग है, प्रगति का निश्चय है
अब कलार-कलवार-कलाल की एकता बिलकुल तय है

इस ध्वज के नीचे आओ
फहराओ, झूमो, गाओ
हम एक हैं दिखाओ

सृजन : 22 मार्च, 2017

***

मतदाता जागरूकता गान

(राष्ट्रीय मतदाता दिवस 25 जनवरी के अवसर पर)

मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
सिटीजनशिप का सम्मान करो

(1)

जब तुम्हें अट्ठारह साल लगे
और यौवन की रुत झूम उठे
खोजो अपने बी.एल.ओ. को
मतदान केंद्र पर जा पहुँचो
भर लो तुम फार्म सिक्स और
मतदाता सूची में आओ
फोटो संग नाम-पता लिक्खा
पहचान पत्र अपना पाओ
पहचान पत्र दिखला कर के
निर्वाचन में मतदान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो

(2)

संशोधन हो, या परिवर्तन
डीलीशन हो या एडिशन
तुम सात, आठ फार्म भर लो
बी.एल.ओ. को दो आवेदन
बीएलओ, बीडीओ एसडीओ
डीएम या दफ़्तर निर्वाचन
मतदाता सूची, बूथ लिस्ट
का नेट पे घर बैठे दर्शन
सुविधाओं का है जाल बिछा
संकल्प करो, मतदान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो

(3)

जब निर्वाचन घोषित होवे
प्रतिनिधि चुनने की बात चले
परखो हर इक प्रत्याशी को
अच्छे लोगों का चयन करो
जो देश की ख़ातिर भी सोचे
संपन्न देश की छवि देखे
ऐसे प्रतिनिधि को ही चुनना
जनतंत्र की यूँ रक्षा करना
जो सजग करे जन गण मन को
उन गुणियों का सम्मान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो

(4)

धन के प्रभाव में मत आना
दारू की बोतल ठुकराना
मज़हब के फेर में मत पड़ना
तुम जात-पात पर मत लड़ना
धन-दौलत की बरसातों को
मदिरा-संग रंगीं रातों को
कुछ भी हो, लोभ को ठुकराना
सुन लो, लालच में मत आना
ख़ुद पर एहसान करो इतना
सब स्वार्थ त्याग मतदान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो

(5)

पहचान पत्र ले कर चलना
मतदान केंद्र का रुख़ करना
पंजी 17 क लायेंगे
हस्ताक्षर उसमें कराएँगे
उंगली पर इंक लगाना तुम
इवीएम का बटन दबाना तुम
जब छोटी पीं का श्रवण करो
मतदान कार्य पूरा समझो
किसको मत दिया न बतलाना
मतदान गुप्त है मान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
मतदान करो, मतदान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो

(6)

प्रत्याशी न भाये कोई यदि
मतदान ज़रूरी है फिर भी
'इनमें से कोई नहीं' नोटा
सबसे नीचे का बटन दबा
तुम अपनी राय बता देना
विविपैट से संपुष्टि करना
विविपैट है इक स्क्रीन नया
जो सात सेकेंड ही चमकेगा
किसको मत दिया बताएगा
इवीएम है सेफ़, बखान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो
मतदान करो, मतदान करो

(7)

मतदान का पावन पर्व है जो
शुभ व्रत, इक यज्ञ इसे जानो
नवयौवन का त्यौहार है ये
गुलशन में आई बहार है ये
खुशहाली की ये ज़मानत है
बेहतर भविष्य की चाहत है
गारंटी है ये तरक्क़ी की
इज़्ज़त की अमन की धरती की
प्रौढ़ों का, सीनियर-सिटीज़न का
महिलाओं का सम्मान करो
जो फ़र्ज़ है उसका ध्यान करो
नवयौवन का सम्मान करो
मतदान करो, मतदान करो
मतदान करो, मतदान करो

राष्ट्रीय मतदाता दिवस के अवसर पर राज्य स्तरीय कार्यक्रम में जन संपर्क विभाग के कलाकारों द्वारा 2012 से समवेत स्वर में गायन
Link : ceobihar.nic.in/nvd/nvd2014/nvd.songs.pdf

*** कलवार गौरव गान***

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

श्री बलभद्र के वंशज हैं हम, बान हमारा परिचय
हम बलभद्र-मनावन करते होता है जब परिणय
मान जाते है प्रभु तुरंत जब अनुनय और विनय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

भू धारी शेषावतार हैं बलशाली जगपालक
हल-मूसल आयुध हैं जिनके जो हैं न्याय-समर्थक
कृष्ण-सुभद्रा के अग्रज को शीश झुका निर्भय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

हम सहस्त्रबाहू अर्जुन की कुल-ज्योति जग वैभव
शौर्य-पराक्रम कार्तवीर्य के कलचुरी-वंश का गौरव
विश्व-विजय का कीर्तिमान स्थापित हमसे जय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

मालवीय, शिवहरे, चौकसे, जायसवाल, मेवाड़ा
व्याहुत, साहू, भगत, गुलहरे, अहलुवालिया, गुप्ता
बिखर गए सौ-सौ वर्गों, उपवर्गों में हम क्षय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

आओ बिखरना बंद करें हम, अब न बंटे आपस में
एक संगठन, एक पताका, एक गान मानस में
अब गद्दी के साथ राजगद्दी का भी निश्चय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

शांति रहे, प्रगति हो, प्रदूषण मुक्त धरा-अम्बर हो
स्वस्थ-निरोग हो, स्वच्छ हो भारत, नशा-मुक्त हर घर हो
हम कुरीतियों के भंजक ! भारत माता की जय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो

जय सहस्त्रबाहू अर्जुन की, श्री बलभद्र की जय हो
हम कलार-कलवार-कलाल का एक ही सुर और लय हो

सृजन 15 दिसम्बर 2016

***

कारगिल के शहीदों के नाम

लाख लाख सलाम तुमको ऐ शहीदाने-वतन
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

तैरता था एक ही सपना तुम्हारी आँख में
एक ही उद्देश्य था धुनता हुआ सर राह में
दुश्मनों की आँख उठ्ठे माँ पे सह सकता नहीं
जिसने दुस्साहस की ऐसी, ज़िन्दा रह सकता नहीं

देश की सरहद की रक्षा का वचन पूरा किया
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

ख़ून की ख़ुशबू बदन के जाम में भर कर दिया
बर्फ़ की चोटी, पहाड़ी लान को गुलशन किया
दनदनाते तोप, गोलों में सफ़र का हौसला
मातृभूमि पर निछावर सर करेंगे, कर दिया

देश को रखा सुरक्षित अन्न का तोहफ़ा दिया
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

गोलियों की गड़गड़ाहट में दिवाली का मज़ा
धमनियों के ख़ून से होली मिलन का सिलसिला
मुस्कुरा कर जां हथेली पर रखे और सो गए
अन्न का बन कर फ़रिश्ता बेख़ुदी में खो गए

आन बान और शान से जीवन को टाटा अलविदा
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

प्रेम का था इक क़दम लाहौर तक बस का सफ़र
झूमता था आँखों में विश्वास का दिलकश नगर
हिन्दो-पाकिस्तान के दो दोस्त जब पास आयेंगे
हमने सोचा था कि दो भाई गले मिल जायेंगे

और लायेगी सबा ख़ुशरंग अपनी सुबहो-शाम
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

अपने अपने मुल्क को हम अम्न का देंगे पयाम
गुनगुनाते लब पे होगा शांति का और सुख का नाम
खेत, खलिहानों, क़बीलों, टोलों पर गोले नहीं
शहर की रानाइयों पर जंग के शोले नहीं

हैफ़ पल भर में लगा ख़्वाब और ख़यालों पर विराम
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

तुम थे चौकन्ना हर इक लम्हा तुम्हें लाखों सलाम
तुमको था आभास दुश्मन का तुम्हें लाखों सलाम
तुमको थी नापाक इरादों की ख़बर तुमको सलाम
कारगिल की घाटियाँ करती रहीं तुमको प्रणाम

तुम न होते तो न जाने होती कैसी सुबहो-शाम
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

दुश्मनों को वो सबक़ सिखलाया तुमने शान से
कारगिल जयघोष उभरा पूरे हिन्दुस्तान से
दिन में ही तारे नज़र आने लगे बेशर्म को
ख़्वाब में भी अब न होंगे हौसले बेशर्म को

कारगिल का खौफ़ है दुश्मन पे रहता सुबहो-शाम
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

उन हवाओं, उन दिशाओं, उन फ़िज़ाओं को सलाम
शौर्य अद्भुत देखने वाली चटानों को सलाम
कारगिल में और विदेशों में अमर होगा ये नाम
गर्व से करते हैं दो सौ कोटी कर तुमको प्रणाम

आस और विश्वास की दौलत समर्पित सुबहो-शाम
ऐ शहीदाने-वतन तुमको मेरा लाखों सलाम

सृजन : 15 जुलाई,1999

* * *

ऐतराफ़

उम्र-भर मैं कर न पाऊंगा तुम्हारा इंतज़ार
तुम भी अपना लो किसी को भूल जाओ मेरा प्यार

तुम थे दीवाने, वफ़ा मेरी भी कुछ सच्ची न थी
भावनाओं में बहो मत कर लो मेरा ऐतबार

जिस्म की ख़्वाहिश हुई पूरी भी तो क्या हो सका
आ के देखो रूह तो रहती है अब भी बेक़रार

तुम जिसे मजनूं समझते थे 'कँवल' कल फ़ख्र से
आज वो अपने किये पर है बहुत ही शर्मसार

सृजन : 21 फ़रवरी, 1977

***

बीता हुआ कल

अब मुझे देखती हो जब भी तुम
सिर्फ़ मुस्का के गुज़र जाती हो

अब न पहले की तरह हँस के मिला करती हो
और ना प्यार से पलकों को झुका रखती हो
अब न शानों पे भी सर अपना रखा करती हो
न ही ख़्वाबीदा निगाहों से तका करती हो

अब मुझे देखती हो जब भी तुम
सिर्फ़ मुस्का के गुज़र जाती हो

मैं पसोपेश में हूँ ज़िन्दगी वीरां हुई क्यूँ
क्या ख़ता इश्क़ ने की हुस्न पशेमान है क्यों
किसने दो प्यार भरे दिल पे सितम ढाया है
किसने मिस्मार किया क़स्रे-मुहब्बत आख़िर

अब मुझे देखती हो जब भी तुम
सिर्फ़ मुस्का के गुज़र जाती हो

अब तो मे-जून की दोपहरी में चुप्पी फैली
ये फ़िज़ा गर्म है, और लू भी चला करती है
पेड़ के साये भी सड़को पे पसर जाते हैं
रास्ते फिर भी तो वीरान नज़र आते हैं

अब मुझे देखती हो जब भी तुम
सिर्फ़ मुस्का के गुज़र जाती हो

अपने कॉलेज की खूबी है कि ना जाने क्यों
तेरी यादों के ग़लीचे से गुज़र जाता हूँ
अश्के-बेजान का हल्का सा सहारा लेकर
मैं ज़माने की निगाहों से छुपा कर ख़ुद को
दिले-माज़ूर से दे देता हूँ धोखा सबको
फिर दबे पाँव झुलसती हुई दोपहरी में

तेरे पैकर के क़रीब आता हूँ
अपना बीता हुआ कल मांगने को

सृजन : 5 जून 1972

***

वक़्त

तुम भी थे पागल, वफ़ा मेरी भी कुछ सच्ची न थी
भावनाओं के समुन्दर की थी वो इक खलबली

जो मिलो ना तुम मुझे, मैं उम्र भर तनहा रहूँ
और कुंवारी तुम रहोगी गर न मैं तुमको मिलूं

कितने दिलकश और पुख़्ता वादा-ओ-पैमां थे वो
हमने तब कुछ भी नहीं समझा था शायद वक़्त को

आज लेकिन खुल गया अपनी वफ़ाओं का भरम
हाँ ! ये मुमकिन है किसी को भी न हो फ़ुर्क़त का ग़म

सृजन : 2 दिसम्बर, 1976

****

हम अपने वादों की उरयानियाँ छुपा न सके
नज़र झुकनी पड़ी यार की शिकायत पर

जुनूं की आरज़ू पूरी न कर सकी दुनिया
तुम्हें भुलाना पड़ा अक़्ल की हिदायत पर

सृजन : 9 जनवरी, 1977

***

मज़बूरी

अपनी ये क़िस्मत कि बरसों से है तू हमसे ख़फ़ा
दिल की ये ज़िद है कि तुझको भूलना मुमकिन नहीं
ज़िन्दगी को चाहिए रंगीन लम्हे रोज़ो-शब
उम्रे-मौजूदा हुई है सरफिरी-सी इन दिनों
प्यार के वादों को ठुकराती है, ये मग़रूर है

जिस्म की ख़्वाहिश कि हो आग़ोश में चेहरा कोई
प्यार तो बस प्यार है जो हो गया बस ठीक है

दुनिया वाले चाहते हैं अब कोई राँझा न हो
माँ मनौती मानती है देवियों की आजकल
मैं भी सुनता हूँ नहीं होती है लव-मैरिज सफल
वस्ले-जानाँ में निहाँ है मौत अपने प्यार की
तुम भी हो मजबूर मिल सकती नहीं खुल कर कभी
हीर बनने की ललक से कुछ नहीं हो पायेगा
एक दिन रांझा बिरह की आंच में गल जायेगा
मुतमईन हो जायेगा
हिज्र है बेहतर नहीं होती है लव-मैरिज सफल

फिर भी अक्सर हूक सी उठती है दिल में हमनशीं
ज़िन्दगी गुज़री नहीं
और सूरज उम्र का ढलने चला, ढल जायेगा
आह ! दिल की ज़िद कि तुझको भूलना मुमकिन नहीं

सृजन :16 जुलाई,1976

***

गुमशुदा लम्हे

फिर सावन के दिन आये
अम्बर पर बादल छाये
रात नशीली हो उट्ठी
हर बात रंगीली हो उट्ठी

ऐसे में चमकी बिजली
नील गगन के आँगन में
कितनों का दिल काँप उठा

ऐसे में मुझको ये लगा
बीते लम्हे याद आये
उफ़ ! वो दिन जब सीने में
ग़म की कोई आग न थी
दर्द मेरा हमराज़ न था
याद किसी की साथ न थी
मैं था और सरमस्ती थी
बज़्मे-कैफ़ो-मस्ती थी
रंगो-नूर की बस्ती थी
बेपरवा थी अपनी भी
बोझल रूह दीवानों सी

सृजन ; 8 मई 1973

* * *

एहसासे-अहदे-गुज़श्ता

1

दर-ब-दर ज़ख़्मों की चादर ओढ़कर
और बेकारी की इक नंगी सनद हाथों में ले
मैं तमन्नाओं का तेरी क्या करूं
ऐ मेरी बेवा जवानी क्या करूं

2

लोगों से कहता हूँ
माँ-बाप की खुशियों की ख़ातिर
मैं तुम्हें अपना न सका
लेकिन जानती हो
वासना की ज़ुल्फ़ों से खेलती हुई
मेरी मजबूरियों का हाथ
दुनिया वालों की साज़िशों से कहीं ज़्यादा था

3

जब बचपन जवानी की दहलीज़ पर पाँव रखता है
क्यों नहीं इन्सान का दिल बूढ़ा हो जाता है

4

हाँ ! मैं वफ़ा-शिआर नहीं
मैं बेवफ़ा हूँ
मैंने एक क्लिओपेट्रा में जूलियट को चाहा था
लेकिन ख़ुद ही सीज़र न बन सका
और ढिंढोरा पीटता चल रहा हूँ
कि लैला की नस्ल ख़त्म हो गयी है

5

जानती हो
ये उर्दू शायरी भी बिलकुल ही वाहियात शय है
उसने
हम लोगों के दिलों में उभरने वाले जज़्ब-ए-इश्क़ को
ख़ूब हवा दी
और जब तमन्नाएँ जवान हुईं
तो ये मालूम हुआ
कबीर दास के भजनों की क़ीमत
'साहिर' लुधियानवी की परछाइयों से कहीं ज़्यादा है

सृजन : 1 सितम्बर,1977

***

सेहरा

अज़ीज़ दोस्त रहमतुल्लाह (रहमत अली रहमत) का सेहरा
बतक़रीब शादी ख़ाना आबादी जनाब रहमुतल्लाह इब्ने जनाब मुस्तक़ीम अहमद साहब मरहूम मोहल्ला वली गंज,
आरा, ज़िला भोजपुर----फ़िक्र – रमेश कँवल

अरमानों के फूलों ने सँवारा है ये सेहरा
दोशीज़ा तमन्नाओं को प्यारा है ये सेहरा

आशाओं के जुगनू हैं ज़ियाबार नज़र में
पुरनूर दिशाओं का इशारा है ये सेहरा

कलियों ने अता की है इसे अपनी नज़ाकत
फूलों के तबस्सुम ने सँवारा है ये सेहरा

ख़्वाबों के दरीचों से ज़रा झाँक के देखो
गुलरंग बहारों का नज़ारा है ये सेहरा

इस सेहरे में इस नाज़ से इक जाने-चमन है
कहता है चमन कितना दिलारा है ये सेहरा

माँ चूम के पेशानी को लेती है बलायें
युग-युग जिये तू, माँ का दुलारा है ये सेहरा

यूँ रूहे-पिदर अर्श से देती है दुआयें
जन्नत की फ़िज़ाओं को भी प्यारा है ये सेहरा

हर फूल है भाई की मुहब्बत से मुअत्तर
'अब्बास' की नज़रों ने निखारा है ये सेहरा

क्यों शाद न हों हज़रते-'नेमत' सरे-महफ़िल
फ़िरदौस नज़र, ख़ुल्द नज़ारा है ये सेहरा

पीने की इजाज़त मिली इक तिश्ना-ब-लब को
रहमत की घटाओं का इशारा है ये सेहरा

आकाश की बांहों में ज़मीं झूम रही है
हूराने-बहिश्ती ने सँवारा है ये सेहरा

एहसास के ज़ीनों को जगाने लगा इक लम्स
इक शोख़ के माथे का सितारा है ये सेहरा

अब सहने-मुलाक़ात न क्योंकर हो मुनव्वर
जब हुस्न के महताब को प्यारा है ये सेहरा

अम्वाज़े-मसर्रत में कँवल झूम रहा है
इख़्लासो-अक़ीदत ने निखारा है ये सेहरा

सृजन : 14 मार्च 1982
शादी ख़ाना आबादी 16 मार्च, 1982

* * *

सेहरा

बतक़रीब शादी ख़ाना आबादी जनाब शहीर आलम इब्ने जनाब खुर्शीद सहर
मिल्लत कोलोनी, सेक्टर 1, फुलवारी शरीफ़,
पटना फ़िक्र – रमेश कँवल

क्या ही दिलकश विसाल का सेहरा
रुख़ पे रौशन जमाल का सेहरा
नूर है दीन और शरीयत का
खिलती कलियाँ कमाल का सेहरा
है ये सुन्नत रसूले-रहमत की
चमका ख़्वाबो-ख़याल का सेहरा
है जो शामिल दुआ बुज़र्गों की
गुल ही गुल नौनिहाल का सेहरा
इब्ने–ख़ुर्शीद झूमे लहराये
देखो रिफ़अत के लाल का सेहरा
फूल रख़्शंदा के चुनिन्दा हैं
वाह चश्मे-गज़ाल का सेहरा
इसको ताबिंदा ने किया रौशन
बाँध कर ख़ुश-ख़याल का सेहरा
भाई शब्बीर का जवाब तो दो
है नज़र में सवाल का सेहरा
साथ नौशा के झूमता है अमीर
ख़ूब है मस्त हाल का सेहरा
दिल से निकली है ये दुआ-ए-पिदर
रहे सरसब्ज़ आल का सेहरा

चूमती है, बलायें लेती है
माँ जो हाथों से लाल का सेहरा
शम्मे-फ़िरदौसी और शहीर आलम
बांधे हैं क्या मिसाल का सेहरा
हाजी राजा मियां, कसीरन ख़ुश
देख कर अपने लाल का सेहरा
अंजुमो-शम्स और आसिफ़ को
आ गया हाल क़ाल का सेहरा
लो अमीना, ज़रीना और निकहत
ढोल पर गायें ताल का सेहरा
अब तो रुख़साना की निगाहों में
खो गया है सवाल का सेहरा
आँखें हैरत में हैं शबाना की
ज़ीनते-ख़त्त-ओ-ख़ाल का सेहरा
हो इजाज़त तो मैं भी मय पी लूँ
आया है पुर्तगाल का सेहरा
पढ़ रहा है 'कँवल' भी ख़ुश होकर
बज़्म में बोल चाल का सेहरा

सृजन 4 जून 2017
शादी ख़ाना आबादी 30 जून 2017

माह्ये

माहिये

1

एक झरोका गुमसुम
बिस्तर की सिलवट
दो क़दमों का मातम

2

सावन का कँवल कहना
तुम मेरे जज़्बे को
इक ताजमहल कहना

3

रुत पे जवानी देखो
उसका क्या कहना
चाल सुहानी देखो

4

फूलों का उड़ा जादू
धूप चढ़ी छत पर
दर-ब-दर हुई ख़ुशबू

5

साजन है सीमा पर
ज़ख़्मों का लश्कर
क्या करना बन-ठन कर

6

रूप सजे घर आँगन
यादों के नश्तर
तीज मनाओ साजन

7

प्रेम दिवानी है तू
बालों का सावन
रात की रानी है तू

8

आप मनायें ख़ुशियाँ
मौसम कोई हो
रक़्स करें रंगरलियाँ

9

यौवन मंज़र मंज़र
तुम हो साथ नहीं
ख़ुशियाँ दुश्मन के घर

10

बाँहों में चले आओ
यौवन - आमंत्रण
सीने में समा जाओ

11

ख़ास हो चाहे आम
तुम सबको मक़बूल
बापू तुम्हें सलाम

सृजन : अक्टूबर 1997
प्रकाशन : गुलबुन, अहमदाबाद के माहिया नंबर में (जनवरी से अप्रैल 1998)

क़त'आत

* * *

क़त'आत

1

कहकशाँ, चाँद-सितारें हैं, मेरा दामन है
दिले-ज़िन्दा है, जवाँ रुत है, हसीं गुलशन है
मयो-मीना की ज़रूरत ही नहीं आज की रात
बे-पिये मस्त हूँ, बाँहों में मेरी 'सावन' है

(सृजन : 8 जून,1974)

2

जबसे तू रूठी है, दिल रहता है अपना बेक़रार
नाम तेरा लेके सब कसते हैं ताने बेशुमार
तुझको भूले-बिसरे कुछ रंगीन लम्हों की क़सम
आ भी जा तू अब कि सावन आ गया जाने-बहार

(सृजन : 21 नवम्बर,1976)

3

फँस गए हैं हम जुदाई के भँवर में आजकल
वक़्त के भूचाल की ज़द में है तिनकों का महल
मत हँसो यारो ! हमारी ज़िन्दगी पर तंज़ से
कल तलक हम भी रहे हैं प्यार का खिलता 'कँवल'

(सृजन : 21 नवम्बर,1976)

4

मेरे क़रीब थे जब तक तुम्हीं थे मेरे ख़ुदा
जुदा हुआ जो मैं तुमसे तो ख़ुद बदलता गया
चले भी आओ कि उल्फ़त की बात रह जाए
हवस की आंच में हर पल पिघल रही है वफ़ा

(1 फ़रवरी, 1975)

5

किसलिए ज़ुल्मो-सितम, जौरो-जफ़ा तुम करते
जब मुहब्बत का सबक़ तुमने दिया था हमदम
रविशे-दह्‌रो-मुक़द्दर ने अलग हमको किया
वरना इस दह्‌र में यक जानो-दो क़ालिब थे हम

(सृजन : 5 मई,1974)

6

तुम भी हो खफ़ा मुझसे, ज़माना भी है नाख़ुश
ठहरा हूँ मुहब्बत का गुनहगार मैं तनहा
मुजरिम तो हो तुम भी मगर इस जुर्मे-वफ़ा में
खींचा गया हूँ दार पे दिलदार मैं तनहा

(सृजन : 13 मई,1974)

7

मेरी उल्फ़त से मेरा फ़र्ज़ उलझ बैठा है
मेरे महबूब ! मेरा हिज्र गवारा कर लो
यही लाजिम है तुम्हारे लिए ऐ मेरे नदीम
भूल जाओ मुझे अब मुझसे किनारा कर लो

(सृजन : 29 अप्रैल,1974)

8

मैं तेरी आराधना हूँ, तू इबादत है मेरी
तेरी चाहत के सिवा कुछ भी नहीं चाहत मेरी
मुस्कुराहट तेरा ज़ेवर, सादगी गहना तेरा
मुफ़लिसी, बेचारगी, आवारगी, क़िस्मत मेरी

(सृजन : 6 नवम्बर 1998)

9

ता-उम्र निगाहों में अगर आलमे-ग़म होगा
तो फ़ासला फिर मंज़िले-उल्फ़त का न कम होगा
अच्छा है ग़मे-जानाँ हँस-हँस के सहा जाए
उम्मीद रहे दिल में इक दिन तो करम होगा

(सृजन :17 अगस्त,1971)

10

क्या हुआ जो इम्बिसाते-आशिक़ी पाया नहीं
लज़्ज़ते-इश्क़ो-वफ़ा का दौर अभी आया नहीं
मुस्कुरा आई तेरी बारी ऐ फ़स्ले-हिज्रे-यार
कौन ऐसा फूल है जो खिल के मुरझाया नहीं

(सृजन : 5 जून, 1973)

11

तुम मुझे भूल गये अहदे-वफ़ा करके सनम
हो के रुस्वा भी नहीं तुमको भुलाया मैंने
तुमने मसला है सदा फूलों को क़दमों के तले
और हर ख़ार को पलकों से लगाया मैंने

(सृजन : 2 जून,1973)

12

यादों की बारात सजी फिर दर्द की गूंजी शहनाई
फिर दिल के वीराने में ली अरमानों ने अंगड़ाई
कैसे ये क़ंदीले-तसव्वुर आज जला बैठे हो 'कँवल'
क्या फ़ुर्क़त की रात अँधेरी तुमको रास नहीं आई

(17 अप्रैल,1972)

पर्यावरण सम्बंधित मुक्तक

ज़हर भरने लगा हवाओं में
जां है साँसत में शहरों-गाँवों में
मस्तियाँ छीन ली पटाखों ने
दम घुटा जाता है फ़िज़ाओं में

शोर है गाड़ियों की सड़कों पर
हॉर्न से कान फट न जाये कहीं
जानवर गामज़न क़तारों में
कोई तरतीब गाड़ियों की नहीं

सब्ज़ियों में फलों, अनाजों में
कीटनाशक न डालिए इतना
बाँझ बन जायेगी धरा अपनी
और नुक़सान होगा सेह्त का

सृजन : 19 दिसम्बर 2018

(मुत़फ़र्रिक़ात)

फुटकर शे'र

***

1

मैं जलती धूप की बाँहों में कसमसाता रहा
मेरे वजूद पे इक शख़्स मुस्कुराता रहा

2

मेरा शहरे-आरज़ू है एक जंगल का सफ़र
डूबते सूरज की बांहों में है ख़्वाबों का खंडर

3

पांव से जूते उतरे बदन से क़बा
अब दरीचों पे परदे नज़र आयेंगे

4

हमसफ़र साथ चलो राह बदलना कैसा
एक बच्चे सा हर इक शय पे मचलना कैसा

5

जिस्मों से आशनाई नहीं छूटती
आप से बेवफ़ाई नहीं छूटती

6

अमीरी कम करे औरत के कपड़े
ग़रीबी मर्द के कपड़े उतारे

7

ज़हर दरिया में घुल गया इतना
मछलियाँ तैरती हैं साहिल पर

8

हैं गवाही पे जब मुनहसिर
मुन्सिफ़ो ! फ़ैसले रह गए

9

वो मुझे भूल बैठे 'कँवल'
इश्क़ के मरहले रह गए

मुहब्बतों का शायर : रमेश "कँवल"

नाम	: रमेश प्रसाद
पिता का नाम	: स्व. हाकिम चंद प्रसाद
माता का नाम	: श्रीमती कमला देवी
जन्म स्थल	: जितौरा,पिरो,आरा,भोजपुर
जन्म तिथि	: 25 अगस्त,1953
शिक्षा	: विज्ञान स्नातक(कलकत्ता विश्वविद्यालय)
	अदीब , डिप्लोमा इन कम्प्युटर्स इन ऑफ़िस मैनेजमेंट
धर्मपत्नी	: श्रीमती मंजू प्रसाद (परिणय 22 जून1978)

अदबी ख़िदमात

'कँवल' शाहाबादी नाम से पहली ग़ज़ल परवाज़, लुधियाना से अगस्त 1972 में प्रकाशित हुई। रमेश प्रसाद 'कँवल' का तख़ल्लुस आरा बिहार की सरज़मीन पर जदीद ग़ज़ल कहने और जदीदियत की वादियों में भटकने के शग़ल ने अता की । इन्हीं वादियों में 'प्रसाद' गुम हो गया ।

प्रकाशित ग़ज़ल संग्रह

लम्स का सूरज(उर्दू),
सावन का कँवल(हिंदी) 1997 में
शोहरत की धूप(हिंदी) 2013 में, रंग-ए –हुनर (उर्दू) 2016 में

अन्य पुस्तकों में शामिल ग़ज़लें

रंगारंग शायरी (संपादक –प्रकाश पंडित)
ग़ज़ल इंटर नेशनल (संपादक मंसूर उस्मानी)
ग़ज़ल : दुष्यंत के बाद भाग 2 (संपादक दीक्षित दनकौरी)
बिहार में जदीद ग़ज़ल (संपादक अताउल्लाह खां अल्वी)
101 किताबें ग़ज़लों की (संपादक नीरज गोस्वामी)
संदल सुगंध भाग 4 (संकलित काव्य संग्रह) में पृष्ठ 33-38 पर ग़ज़लें
हिंदी ग़ज़ल का बदलता मिज़ाज (संपादक अनिरुद्ध सिन्हा) पृष्ठ 92-98 पर ग़ज़लें
आमने सामने : (इंटरव्यू संग्रह) : ए.आर.आज़ाद
कविताकोश www.kavitakosh.org पर 80 से ज़्यादा ग़ज़लें-गीत
www.urduyouthforum.org पर 25 से ज्यादा ग़ज़लें
www.rekhta.org पर 10 ग़ज़लें
हिंदी-उर्दू के अनेक पत्र पत्रिकाओं,पुस्तकों में ग़ज़लें प्रकाशित
आकाशवाणी और दूरदर्शन के विभिन्न कार्यक्रमों में ग़ज़लें प्रसारित

सम्मान और पुरस्कार

हिंदी साहित्य सम्मलेन पटना से साहित्य भूषण
साहित्यकार संसद समस्तीपुर से 'फ़िराक़ गोरखपुरी राष्ट्रीय शिखर सम्मान'
कामायनी, भागलपुर से दुष्यंत कुमार स्मृति पुरस्कार
अखिल भारतीय ग़ज़लकार सम्मलेन,नयी दिल्ली से आबरू-ए-ग़ज़ल
जेमिनी अकादमी, पानीपत,हरियाणा से आचार्य सम्मान
कलीमुल्लाह कलीम दोस्तपुरी उर्दू अदब एवार्ड,पटना
विश्व अंगिका साहित्य सम्मलेन ,पटना
सहित अनेक संस्थाओं से सम्मानित – पुरस्कृत

चर्चित मज़्मून

"दुःख की मीठी आंच का शायर : रमेश कँवल" - प्रोफ़ेसर मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

"कँवल : शख़्सियत और शायरी" -- डा.अमरेन्द्र

"लम्स की ख़ुशबू : सावन का कँवल" --- प्रोफ़ेसर मनाज़िर आशिक़ हरगानवी

"फ़न-ओ-फ़िक्र की पाकीज़गी का शायर : रमेश कँवल" ---अनवारे-इस्लाम

"रूमानियत की ख़ुशबू से लबरेज़ है शोहरत की धूप" -- जनाब विजेंद्र शर्मा

"हर्फ़े-चंद" -- प्रो.तल्हा रिज़वी बर्क़

"ऐतराफ़े-कमाल" – जनाब मंसूर उस्मानी

'रमेश कँवल' : मुहब्बतों का शायर -- ज़मीर दरवेश

रमेश कँवल और उनका आईना-ए-फ़न -- डा.आसिफ़ सलीम

'ख़ूब है' तरज़ी को भी कहना पड़ा 'रंगे-हुनर' --- अब्दुल मन्नान तरज़ी

'शिव के अवतार हैं रमेश कँवल' -- अरुण कुमार आर्य

श्री टी.डी.चोपड़ा 'फ़िदा', श्री सुमन अग्रवाल,चेन्नई ,

जनाब लुत्फ़-उर-रहमान, डा.एजाज़ अली अरशद के आलेख

सम्प्रति :

बिहार प्रशासनिक सेवा में संयुक्त सचिव स्तर के पद से सेवानिवृत (पटना में लगभग 3 साल तक ए डी एम लॉ एंड आर्डर रहे) के पश्चात सफ़ीरे-शहरे-शे'रो-अदब

सदर (चेयरपर्सन) :

बज़्मे-हफ़ीज़ बनारसी,पटना : मरकज़े-रंगे-हुनर

निवास : 6, मंगलम विहार कॉलोनी, आरा गार्डन रोड,
जगदेव पथ, पटना - 800014

मोबाइल 709 159 6715 / 878 976 1287

ई-मेल rameshkanwal78@gmail.com

वेबसाइट : www.rameshkanwal.com

तस्वीरें

जगदल(पश्चिम बंगाल) का पुश्तैनी घर

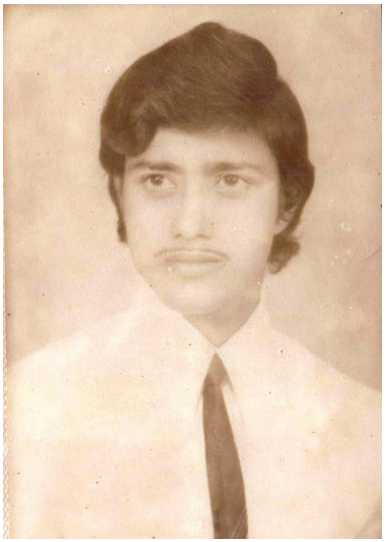

पहली ग़ज़ल का शायर 'कँवल' शाहाबादी

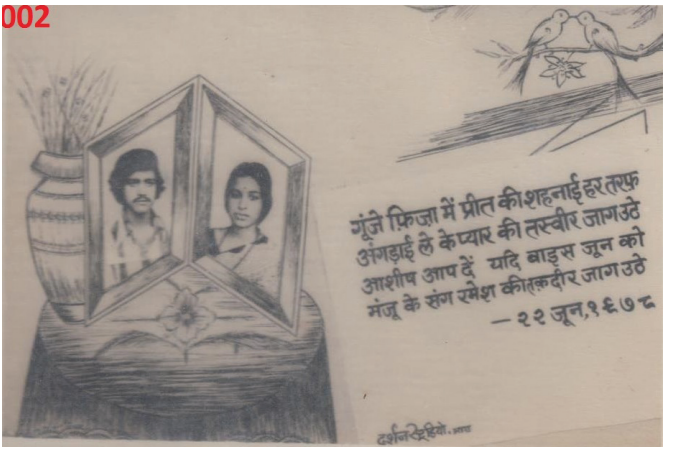

मेरी शादी का दावतनामा

शरीके - हयात मंजू के साथ

उर्दू में ग़ज़लों का पहला मजमुआ
"लम्स का सूरज"

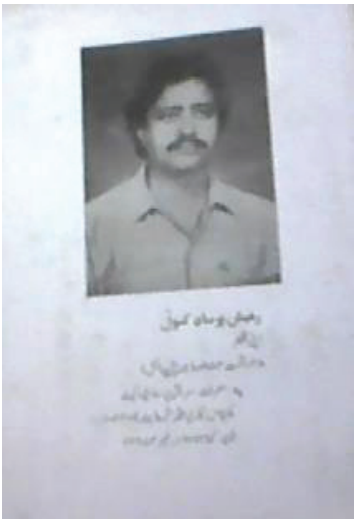

"लम्स का सूरज" (1997)
का शायर

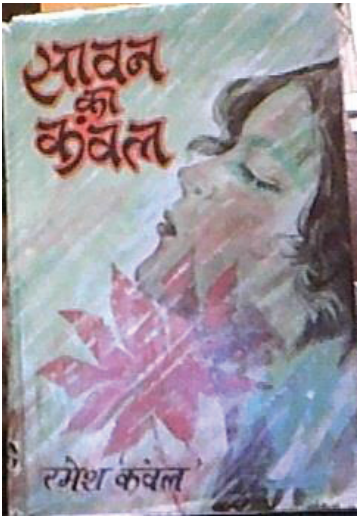

हिंदी में ग़ज़लों का पहला मजमुआ
"सावन का कँवल"

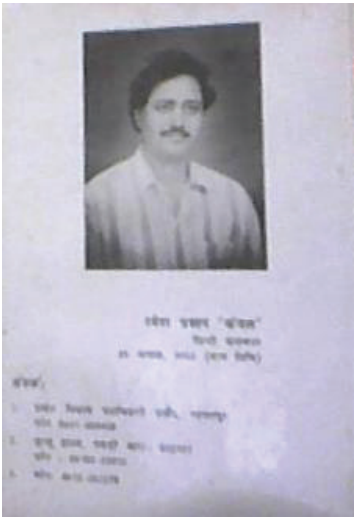

"सावन का कँवल"(1997)
का शायर

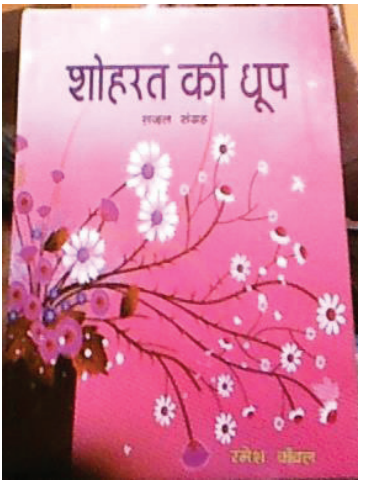

हिंदी में ग़ज़लों का दूसरा मजमुआ
"शोहरत की धूप" -2013

"शोहरत की धूप" 2013
का शायर

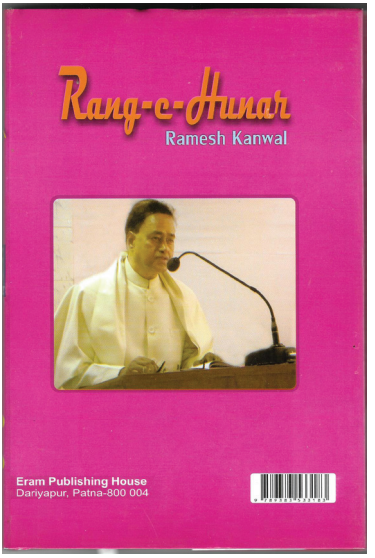

"रंग-ए-हुनर" 2016
का शायर

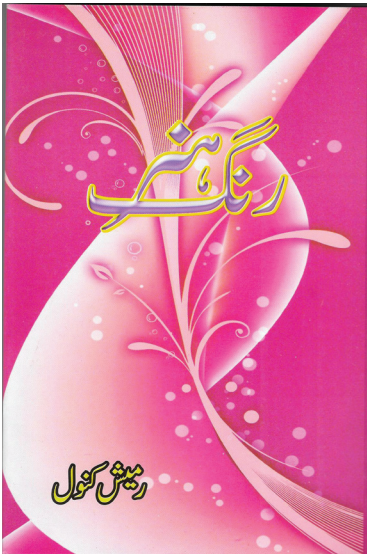

उर्दू में ग़ज़लों का दूसरा मजमुआ
"रंग-ए-हुनर" 2016

पकड़ी, आरा का घर माँ– बाबूजी (दिसंबर 1998)

मंगलम विहार कॉलोनी, पटना का हमारा आशियाना

गुलों की ताज़गी हूँ
मैं मस्ती की नदी हूँ
'कँवल' की ज़िन्दगी हूँ

शादी की पच्चीसवीं सालगिरह

मुझपे उसका करम है 'कँवल'
वो मेरा हमसफ़र बन गया

परिणय के रजत जयंती वर्ष का जयमाल

सिल्वर जुबली उत्सव में मंजूश्री

मंजू : 11 नवम्बर 1984

श्री अशोक चक्रधर के साथ रमेश कँवल

श्री दीक्षित दनकौरी के साथ रमेश कँवल

लम्स का सूरज का लोकार्पण बिहार कृषि विश्वविद्यालय के सभागार में
26 अक्टूबर 1997

प्रो.तल्हा रिज़वी बर्क़ और प्रो.मनाज़िर आशिक़ हरगानवी के साथ रमेश कँवल

जनाब शाहिद जमील, श्री रमेश 'कँवल', प्रो.वहाब अशरफ़ी मरहूम, प्रो. मनाज़िर आशिक़ हरगानवी, जनाब एम.ए.हक़ (20 जुलाई 2011)

विमोचन के अवसर पर इल्मी मजलिस सनद एजाज़ देते हुए

रमेश कँवल को सम्मानित करते हुए जनाब इम्तियाज़ अहमद करीमी,
प्रो.तल्हा रिज़वी बर्क़, प्रो.अलीमुल्लाह हाली और डा.अनिल सुलभ

श्री मुनीर सैफ़ी, श्री एम.आर.मल्लिक, डा.एहसान शाम, श्री अभय कुमार बेबाक, श्री शाहिद जमील और श्री रमेश कँवल

श्री रमेश कँवल, श्री शंकर कैमूरी, प्रो.एजाज़ अली अरशद और जनाब शफ़ी मशहदी आकाशवाणी,पटना में रिकॉर्डिंग के अवसर पर 13 मार्च 2019

ज्येष्ठ सुपुत्र कुमार अभिषेक 2010

कनिष्ठ सुपुत्र कुमारसंभव 2012

ज्येष्ठ सुपुत्री अभिलाषा

मत कल्पनाओं में जियो देखो चरित्र समाज का
आगामी दिन के सुख की तो बुनियाद त्याग है आज का
शिक्षा ग्रहण जम कर करो जीवन में खुशियाँ मिल सके
मेहनत करो कुछ साल कि यौवन की कलियाँ खिल सके

कनिष्ठ सुपुत्री शुभकामना

जीवन सँवारो ख़ूबसूरत ढंग से जीवन जियो
सुख बाँट कर अपना परायी आँख के आँसू पियो
आशीष है शिक्षित बनो उपकार की हो भावना
शुभकामना को जन्म दिन की है बहुत शुभकामना

ख़िराजे-अक़ीदत
महबूब शायर साहिर लुधियानवी को

1

परछाइयाँ पीछे थीं परेशान थे 'साहिर'
नाज़ां है वफ़ा जिस पे वो इन्सान थे 'साहिर'
हासिल थी उन्हें रिफ़अत-ए-अफ्लाक़ भी लेकिन
हम ख़ाकनशीनों के निगहबान थे 'साहिर'

2

होंठों पे तल्ख़ियों के समंदर उदास हैं
आँखों में सच्चे प्यार के मंज़र उदास हैं
शीशे के जिस्म ही नहीं 'साहिर' की मौत से
जमुना किनारे ताज के पत्थर उदास हैं

अवसान : 25 अक्टूबर 1980
सृजन : 26 अक्टूबर 1980